रजिस्ट्रेशन : बी आर 35/0029626

आईएसएसएन नंबर : 9334-0970

प्रान्ति इंडिया

प्रधान संपादक : ए. के. प्रसाद

www.prantiindia.com

+91 9453535495 | editor@prantiindia.com

वर्ष 01, अंक 05, पेज 53, मूल्य ₹150 | साहित्य की नई पीढ़ी की पहचान | नवंबर 2024, बगौरा (बिहार) से प्रकाशित

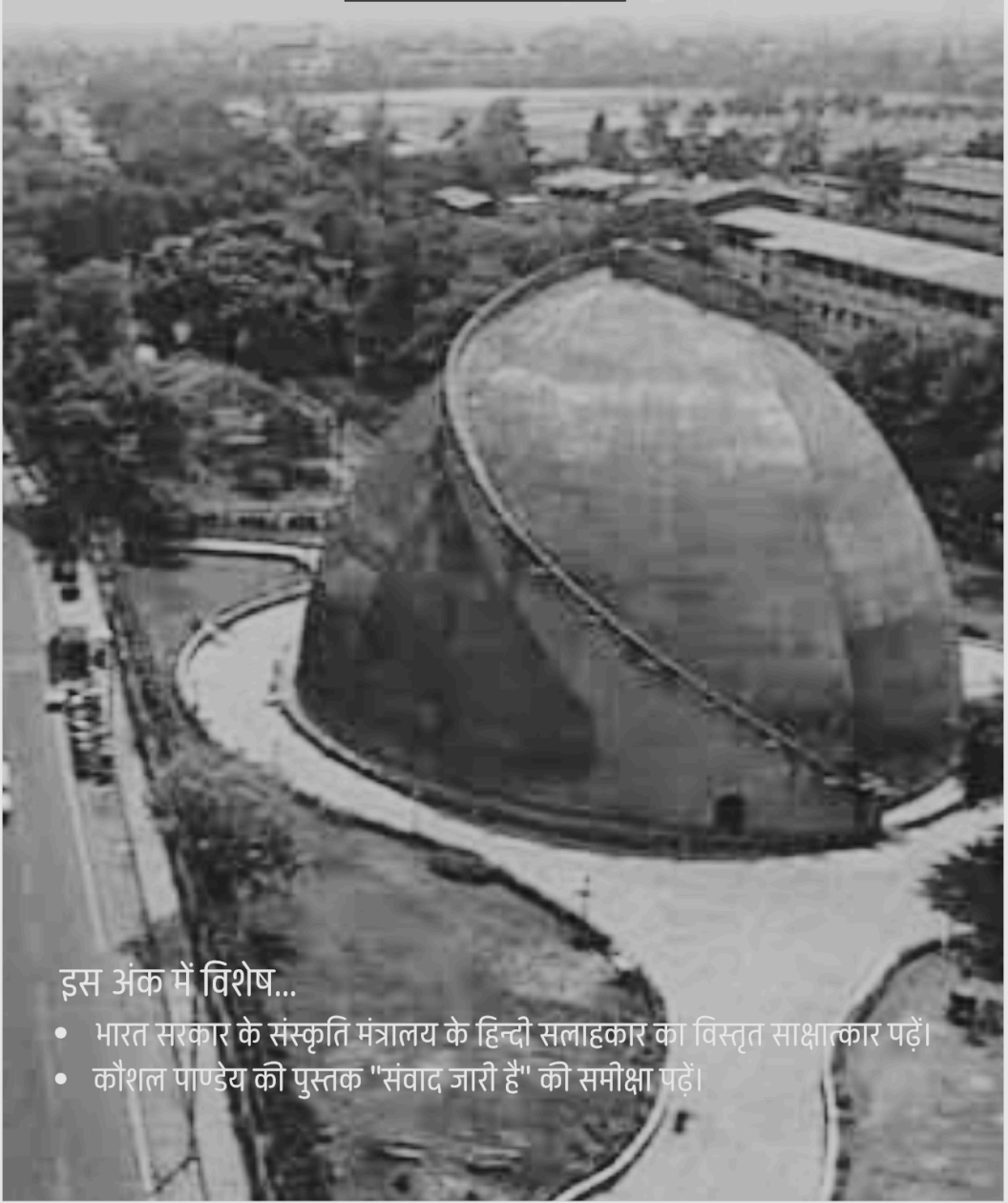

इस अंक में विशेष...

- भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय के हिन्दी सलाहकार का विस्तृत साक्षात्कार पढ़ें।
- कौशल पाण्डेय की पुस्तक "संवाद जारी है" की समीक्षा पढ़ें।

इस अंक में

हमारे बारे में 03
संपादन मंडल 04
प्रबंधन विभाग 05
समन्वयन समिति 06
सलाह केंद्र 07
अभिकल्पन प्रकोष्ठ 08
हमारे संपादक 09
संपादकीय 10
समीक्षा 11
चित्रकारी 12
साक्षात्कार 13
पद्य रचनाएं 20
गद्य रचनाएं 51

हमारे बारे में

प्रान्ति इंडिया एक साहित्यिक संगठन है जो भारत में स्थित है। इसका मुख्य उद्देश्य साहित्य और संस्कृति के क्षेत्र में नए और स्थापित लेखकों को प्रोत्साहित करना और उनकी रचनाओं को प्रकाशित करना है। प्रान्ति इंडिया की स्थापना साहित्य सेवा के उद्देश्य से सन् 2021 में ए. के. प्रसाद द्वारा की गई थी, जो एक प्रकाशक और संपादक हैं। उन्होंने अपने जीवन में कई उतार-चढ़ाव देखे हैं और साहित्य के क्षेत्र में अपनी पहचान बनाई है। प्रान्ति इंडिया की अनुभवी विषय-विशेषज्ञों, लेखकों और संपादकों की प्रतिबद्ध टीम गहन शोध एवं विश्लेषण के पश्चात् गद्य व पद्य, दोनों में सर्जनात्मक लेखन प्रकाशित करती है। प्रान्ति इंडिया की अनुभवी टीम में पीएच.डी., एम.ए., बी.एड. इत्यादि डिग्रीधारी विशेषज्ञ शामिल हैं। इनका एकमात्र उद्देश्य अपने सर्वोत्तम ज्ञान, अनुभव व प्रयासों को आपतक पहुँचाना है। इस टीम द्वारा प्रदत्त आँकड़ों एवं तथ्यों को विभिन्न मानक एवं प्रामाणिक स्त्रोतों का उपयोग कर तैयार किया जाता है। प्रान्ति इंडिया के सदस्यों की एक मीटिंग में विचार-विमर्श के बाद सर्वसम्मति से ए. के. प्रसाद के संपादकत्व में मासिक साहित्यिक पत्रिका प्रान्ति इंडिया का जुलाई 2024 में शुभारंभ हुआ। प्रान्ति इंडिया की मासिक साहित्यिक पत्रिका का उद्देश्य नवोदित रचनाकारों की रचनाओं का प्रकाशन कर नवांकुर के सृजनात्मक लेखन को प्रोत्साहित करना है। यह पत्रिका विभिन्न प्रकार की सामग्री प्रकाशित करती है, जैसे कि कविताएं, गज़लें, कहानियां, निबंध, एकांकी, नाटक, चित्रकला, आदि। प्रान्ति इंडिया की पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं के लिए रचनाकारों के विचार उनके निजी होते हैं और उनसे स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक या संपादक का सहमत या असहमत होना जरूरी नहीं है। अगर कॉपीराइट का कोई मामला सामने आता है, तो केवल रचनाकार को ही जिम्मेदार ठहराया जाएगा। प्रान्ति इंडिया का राजिस्ट्रेशन : बी आर 35/0029626 तथा आईएसएसएन नंबर 9334-0970 है। इसका कार्यालय बगौरा, बिहार 841404 में स्थित है। प्रान्ति इंडिया के लिए यदि आपके पास कुछ सुझाव/शिकायत है तो विभागीय कार्रवाई के लिए निम्नांकित विभागों के eमेल पर अथवा मुख्य कार्यकारी अधिकारी को डाक द्वारा भी भेज सकते हैं।

संपादन मंडल : editor@prantiindia.com

प्रबंधन विभाग : manager@prantiindia.com

समन्वयन समिति : coordinator@prantiindia.com

सलाह केंद्र : advisor@prantiindia.com

अभिकल्पन प्रकोष्ठ : designer@prantiindia.com

इसके अलावा, प्रान्ति इंडिया सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स पर भी सक्रिय है, जैसे कि फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम, आदि। आप प्रान्ति इंडिया को सोशल मीडिया पर फॉलो कर सकते हैं और साहित्यिक गतिविधियों में भाग ले सकते हैं।

संपादन मंडल

प्रान्ति इंडिया के संपादकीय कार्यान्वयन के लिए संपादक ए. के. प्रसाद की अध्यक्षता में 02 जुलाई 2024 को संपादन मंडल का गठन किया गया।

संपादन मंडल के कार्य:

- सामग्री की समीक्षा और संपादन: संपादन मंडल प्रान्ति इंडिया के लिए प्रस्तुत की गई सामग्री की समीक्षा और संपादन करता है, ताकि सुनिश्चित किया जा सके कि सामग्री उच्च गुणवत्ता की है और पाठकों के लिए उपयुक्त है।

- सामग्री की योजना और विकास: संपादन मंडल सामग्री की योजना और विकास के लिए जिम्मेदार है, जिसमें विषयों का चयन, लेखकों का चयन, और सामग्री के प्रारूप का निर्धारण शामिल है।

- सामग्री की प्रकाशन तैयारी: संपादन मंडल सामग्री की प्रकाशन तैयारी के लिए जिम्मेदार है, जिसमें सामग्री का संपादन, प्रूफरीडिंग, और डिज़ाइन शामिल है।

- गुणवत्ता नियंत्रण: संपादन मंडल गुणवत्ता नियंत्रण के लिए जिम्मेदार है, जिसमें सुनिश्चित किया जाता है कि प्रकाशित सामग्री उच्च गुणवत्ता की है और पाठकों के लिए उपयुक्त है।

इन कार्यों के माध्यम से, संपादन मंडल प्रान्ति इंडिया के संपादन कार्यों को संभालता है और साहित्यिक उत्कृष्टता की दिशा में काम करता है।

संपादन मंडल के सदस्य:

1. डॉ. लेखराज शर्मा (सदस्य, प्रान्ति इंडिया)
2. डॉ. विनीत विद्यार्थी (सदस्य, प्रान्ति इंडिया)
3. डॉ. राजलक्ष्मी शिवहरे (सदस्य, प्रान्ति इंडिया)
4. डॉ. अनिता जठार (सदस्य, प्रान्ति इंडिया)
5. डॉ. गायत्री कोंपल (सदस्य, प्रान्ति इंडिया)

इन सदस्यों को प्रान्ति इंडिया के संपादन कार्यों को संभालने की जिम्मेदारी दी गई है। वे मिलकर सुनिश्चित करेंगे कि किस स्तर की प्रकाशन सामग्री पुस्तक पत्रिका के लिए चयनित व प्रकाशित होगी।

हमारा eमेल है : editor@prantiindia.com

प्रबंधन विभाग

प्रान्ति इंडिया के दैनंदिन प्रबंधन के लिए प्रबंधक प्रदीप प्रसाद की अध्यक्षता में 02 जुलाई 2024 को प्रबंधन विभाग का गठन किया गया।

प्रबंधन विभाग के कार्य:

- दैनिक कार्यों का संचालन और निगरानी: प्रबंधन विभाग प्रान्ति इंडिया के दैनिक कार्यों का संचालन और निगरानी करता है, ताकि सुनिश्चित किया जा सके कि सभी कार्य समय पर और प्रभावी ढंग से पूरे हों।

- संसाधनों का प्रबंधन और आवंटन: प्रबंधन विभाग प्रान्ति इंडिया के संसाधनों का प्रबंधन और आवंटन करता है, ताकि सुनिश्चित किया जा सके कि सभी विभागों और टीमों को आवश्यक संसाधन उपलब्ध हों।

- कार्यक्रमों का आयोजन और समन्वय: प्रबंधन विभाग प्रान्ति इंडिया के कार्यक्रमों का आयोजन और समन्वय करता है, ताकि सुनिश्चित किया जा सके कि सभी कार्यक्रम समय पर और प्रभावी ढंग से आयोजित हों।

- नीतियों का निर्धारण और लागू करना: प्रबंधन विभाग प्रान्ति इंडिया की नीतियों का निर्धारण और लागू करने के लिए जिम्मेदार है, ताकि सुनिश्चित किया जा सके कि सभी कार्यों में एकरूपता और संगठन हो।

- संचार और समन्वय: प्रबंधन विभाग प्रान्ति इंडिया के विभिन्न विभागों और टीमों के बीच संचार और समन्वय करता है, ताकि सुनिश्चित किया जा सके कि सभी कार्यों में तालमेल और संगठन हो।

इन कार्यों के माध्यम से, प्रबंधन विभाग प्रान्ति इंडिया के कार्यों में अधिक संगठन और प्रभावी ढंग से संचालन सुनिश्चित करता है।

प्रबंधन विभाग के सदस्य:

1. श्री रामजी मल (सदस्य, प्रान्ति इंडिया)
2. श्री अच्युत उमर्जी (सदस्य, प्रान्ति इंडिया)
3. श्री अरुण शुक्ला (सदस्य, प्रान्ति इंडिया)
4. श्रीमती नीरज वर्मा (सदस्य, प्रान्ति इंडिया)
5. श्रीमती प्रेमलता यदु (सदस्य, प्रान्ति इंडिया)

इन सदस्यों को प्रान्ति इंडिया के प्रबंधन कार्य को संभालने की जिम्मेदारी दी गई है। वे मिलकर सुनिश्चित करेंगे कि उद्देश्यों और लक्ष्यों के लिए संसाधनों का समय पर इंतजाम हो।

हमारा eमेल है : manager@prantiindia.com

समन्वयन समिति

प्रान्ति इंडिया के गतिविधियों के क्रियान्वयन के लिए समन्वयक फुलवन्ती देवी की अध्यक्षता में 02 जुलाई 2024 को समन्वयन समिति का गठन किया गया।

समन्वयन समिति के कार्य:

- गतिविधियों का समन्वयन करना: समन्वयन समिति सभी गतिविधियों का समन्वयन करती है, जैसे कि साहित्यिक कार्यक्रम, प्रकाशन व अन्य साहित्यिक आयोजन। यह सुनिश्चित करती है कि सभी गतिविधियां उद्देश्यों के अनुसार चल रही हैं और एक दूसरे के साथ समन्वयित हैं।

- टीम के बीच समन्वय स्थापित करना: समन्वयन समिति टीम के सदस्यों के बीच समन्वय स्थापित करती है ताकि वे एक दूसरे के साथ प्रभावी ढंग से काम कर सकें। यह सुनिश्चित करती है कि सभी सदस्य एक दूसरे के काम से अवगत हैं और एक दूसरे की जरूरतों को पूरा कर रहे हैं।

- सहयोगी के साथ समन्वय स्थापित करना: समन्वयन समिति सहयोग करने वाले संगठनों और व्यक्तियों के साथ समन्वय स्थापित करती है ताकि हमें अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने में मदद कर सके। यह सुनिश्चित करती है कि सभी सहयोगी संगठन व व्यक्ति उद्देश्यों के अनुसार काम कर रहे हैं।

- प्रगति की निगरानी करना: समन्वयन समिति प्रगति की निगरानी करती है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि हम अपने उद्देश्यों की दिशा में आगे बढ़ रहे है। यह सुनिश्चित करती है कि सारी गतिविधियां प्रभावी ढंग से चल रही हैं। हम अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए प्रगति कर रहे हैं।

इन कार्यों के माध्यम से, समन्वयन समिति प्रान्ति इंडिया के गतिविधियों में समन्वयन को संभालता है और लक्ष्यों की प्राप्ति के उद्देश्य से काम करता है।

समन्वयन समिति के सदस्य:

1. सुश्री इला कुमारी (सदस्य, प्रान्ति इंडिया)
2. सुश्री सोनल ओमर (सदस्य, प्रान्ति इंडिया)
3. सुश्री नेहा चौरसिया (सदस्य, प्रान्ति इंडिया)
4. सुश्री पल्लवी श्रीवास्तव (सदस्य, प्रान्ति इंडिया)
5. सुश्री रितु झा (सदस्य, प्रान्ति इंडिया)

इन सदस्यों को प्रान्ति इंडिया के गतिविधियों के क्रियान्वयन में तालमेल को संभालने की जिम्मेदारी दी गई है। वे मिलकर सुनिश्चित करेंगे कि कब और किस तरह साहित्यिक गतिविधियों एवं कार्यक्रमों के सफल क्रियान्वयन के लिए योजना बनाई जाए।

हमारा eमेल है : coordinator@prantiindia.com

सलाह केंद्र

प्रान्ति इंडिया के मार्गदर्शन के लिए सलाहकार प्रशान्त अमन की अध्यक्षता में 02 जुलाई 2024 को सलाह केंद्र का गठन किया गया।

सलाह केंद्र के कार्य:

- मार्गदर्शन प्रदान करना: सलाह केंद्र संगठनिक मार्गदर्शन प्रदान करेगा, जिसमें संगठन की गतिविधियों और नीतियों को विकसित करने में मदद की जाएगी। यह मार्गदर्शन उद्देश्यों को प्राप्त करने में मदद करेगा।

- समस्या समाधान संबंधी सलाह: सलाह केंद्र समस्याओं का समाधान करने में मदद करेगा, जो संगठन की प्रगति में मदद करेगा। यह समस्या समाधान संबंधी सलाह उद्देश्यों को प्राप्त करने में मदद करेगा।

- विकास संबंधी सलाह: सलाह केंद्र विकास में मदद करेगा, जो सुनिश्चित करेगा कि संगठन उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए तैयार है। यह विकास संबंधी सलाह उद्देश्यों को प्राप्त करने में मदद करेगा।

- सुधार संबंधी सलाह: सलाह केंद्र संगठन में सुधार करने में मदद करेगा, जो सुनिश्चित करेगा कि संगठन अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए तैयार है। यह सुधार संबंधी सलाह उद्देश्यों को प्राप्त करने में मदद करेगा।

इन कार्यों के माध्यम से, सलाह केंद्र प्रान्ति इंडिया को मार्गदर्शन प्रदान करेगा और संगठन की प्रगति में मदद करेगा।

सलाह केंद्र के सदस्य:

1. श्री रवि शर्मा (सदस्य, प्रान्ति इंडिया)
2. श्री विनोद प्रसाद (सदस्य, प्रान्ति इंडिया)
3. श्री भोला शरण प्रसाद (सदस्य, प्रान्ति इंडिया)
4. श्री व्यग्र पाण्डेय (सदस्य, प्रान्ति इंडिया)
5. श्रीमती स्नेह गोस्वामी (सदस्य, प्रान्ति इंडिया)

इन सदस्यों को प्रान्ति इंडिया के लक्ष्यों व उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु मार्गदर्शन की जिम्मेदारी दी गई है। वे मिलकर सुनिश्चित करेंगे कि मार्गदर्शन और सलाह की सहायता से गतिविधियां सही दिशा में चल रही है।

हमारा eमेल है : advisor@prantiindia.com

अभिकल्पन प्रकोष्ठ

प्रान्ति इंडिया के रचनात्मक संयोजन के लिए अभिकल्पक सौरभ कुमार की अध्यक्षता में 11 जुलाई 2024 को अभिकल्पन प्रकोष्ठ का गठन किया गया।

अभिकल्पन प्रकोष्ठ के कार्य:

- पुस्तक का कवर डिजाइन करना: अभिकल्पन प्रकोष्ठ पुस्तक के कवर का डिजाइन बनाता है, जिसमें पुस्तक का शीर्षक, लेखक का नाम, और अन्य आवश्यक जानकारी शामिल होती है।

- पुस्तक के अंदर चित्र डिजाइन करना: अभिकल्पन प्रकोष्ठ पुस्तक के अंदर चित्रों का डिजाइन बनाता है, जिसमें ग्राफिक्स, चित्र, और अन्य दृश्य तत्व शामिल होते हैं।

- वेबसाइट डिजाइन और विकास: अभिकल्पन प्रकोष्ठ वेबसाइट का डिजाइन और विकास करता है, जिसमें वेबसाइट की संरचना, डिजाइन, और कार्यक्षमता शामिल है।

- सोशल मीडिया डिजाइन और प्रबंधन: अभिकल्पन प्रकोष्ठ सोशल मीडिया प्लेटफॉर्मों पर सामग्री का डिजाइन और प्रबंधन करता है, जिसमें पोस्ट, ग्राफिक्स, और अन्य दृश्य तत्व शामिल होते हैं।

इन कार्यों के माध्यम से, अभिकल्पन प्रकोष्ठ प्रान्ति इंडिया के रचनात्मक कार्यों को संभालता है और कौशल विकास की दिशा में काम करता है।

अभिकल्पन प्रकोष्ठ के सदस्य:

1. श्री शशि धर कुमार (सदस्य, प्रान्ति इंडिया)
2. श्री अंकुर सिंह (सदस्य, प्रान्ति इंडिया)
3. श्री रोहताश वर्मा (सदस्य, प्रान्ति इंडिया)
4. श्री आनंद सिसोदिया (सदस्य, प्रान्ति इंडिया)
5. श्री खुमन सिंह (सदस्य, प्रान्ति इंडिया)

इन सदस्यों को प्रान्ति इंडिया के प्रकाशन सामग्री के डिजाइन कार्यों को संभालने की जिम्मेदारी दी गई है। वे मिलकर सुनिश्चित करेंगे कि डिजाइन सामग्री आकर्षक और प्रभावशाली हो।

हमारा eमेल है : designer@prantiindia.com

हमारे संपादक

ये हैं ए. के. प्रसाद जिनका जन्म 10 जनवरी को बिहार के सीवान में स्थित बगौरा में वैश्य परिवार में हुआ था। इनके पिताजी श्री प्रदीप प्रसाद और पितामह श्री जगदीश प्रसाद व्यवसायी हैं। माताजी श्रीमती फुलवन्ती देवी गृहिणी हैं। इन्होंने शुरुआती शिक्षा गांव से प्राप्त करने के पश्चात काशी हिंदू विश्वविद्यालय (बीएचयू) से अपनी पढाई पूरी की। इनकी बाल्यकाल से हिन्दी साहित्य के अध्ययन में विशेष रुचि का परिणाम सातवीं कक्षा में दिखने लगा। अपने शब्दचयन, भाषा, संवेदना की ताजगी और रचना विन्यास में चौकस संधान जैसी विशेषताओं के कारण उन्होनें हिंदी साहित्य के सुधी पाठकों का ध्यान आकृष्ट किया और देश के कोने कोने में कवि सम्मेलनों में जाकर कविता सुनाकर सभी को आनंदित कर वाह-वाही लूटने लगे। ये अपने पिताजी के सानिध्य व सहयोग से एक प्रकाशक के रूप में इक्कीसवीं सदी के तीसरे दशक में उदित हुए। इन्होंने साहित्य सेवा के उद्देश्य से सन् 2021 में प्रान्ति इंडिया की स्थापना की। इन्होंने कुछ दिन व्यक्तिगत रूप से कार्यों का अनुभव लिया फिर एक अनुभवी विषय-विशेषज्ञों, लेखकों और संपादकों की प्रतिबद्ध टीम का गठन कर गहन शोध एवं विश्लेषण के पश्चात् गद्य व पद्य, दोनों में सर्जनात्मक लेखन प्रकाशित करना शुरू किया। अभी तक यह टीम 10 से अधिक पुस्तकें प्रकाशित कर चुकी है और प्रतिवर्ष लगभग 8-10 नई पुस्तकें प्रकाशित करने का इरादा रखती है। इस अनुभवी टीम में पीएच.डी., एम.ए., बी.एड. इत्यादि डिग्रीधारी विशेषज्ञ शामिल हैं। इनका एकमात्र उद्देश्य अपने सर्वोत्तम ज्ञान, अनुभव व प्रयासों को आपतक पहुँचाना है। प्रान्ति इंडिया की टीम द्वारा प्रदत्त आँकड़ों एवं तथ्यों को विभिन्न मानक एवं प्रामाणिक स्त्रोतों का उपयोग कर तैयार किया जाता है। इनका सदैव यह प्रयास रहता है कि सरल व सहज भाषा-शैली में आपके समक्ष प्रस्तुत हुआ जाए। प्रान्ति इंडिया के सदस्यों की एक मीटिंग में विचार-विमर्श हुआ कि वर्तमान परिवेश में प्रकाशन व्यवसाय की व्यवस्था कितनी विस्तृत व महंगी हो गयी है। आजकल तो लेखक बनने की इच्छा रखने वाले हर रचनाकार का शुरुआती मन इस दुविधा से जूझता ही है कि यात्रा का प्रारंभ किस प्रकार किया जाए ? सबसे पहले किस प्रकाशक के पास जाया जाए ? यह कैसे सुनिश्चित किया जाए कि रचनाएं छप ही जाएगी ? यदि कहीं गलत जगह नवांकुर अपनी पांडुलिपि और पैसा देकर फंस गया तो फिर किसी और प्रकाशक पर विश्वास कर पुनः प्रयास करना उसके लिए मुश्किल हो जाता है। इन्हीं सब उधेड़बुन से निकालने के लिए प्रान्ति इंडिया के सदस्यों की सर्वसम्मति से ए. के. प्रसाद के संपादकत्व में मासिक साहित्यिक पत्रिका प्रान्ति इंडिया का जुलाई 2024 में शुभारंभ हुआ और यह निर्धारित किया गया कि इस पत्रिका का मुख्य उद्देश्य नवोदित रचनाकारों की रचनाओं का प्रकाशन कर नवांकुर के सृजनात्मक लेखन को प्रोत्साहित करना है। कोई भी, किसी भी उम्र का रचनाकार अपनी कविताएं, गज़लें, कहानियां, निबंध, एकांकी, नाटक, चित्रकला, आदि प्रकाशन-सामग्री अपने संक्षिप्त परिचय और एक फोटो के साथ कार्यालय में संपादक की eमेल editor@prantiindia.com पर प्रत्येक महीने के 25 तारीख तक भेज सकते है।

संपादकीय

प्रान्ति इंडिया का नवंबर 2024 अंक आपके सामने है, जो आपके अथक प्रयास और सहयोग का परिणाम है। हमें गर्व है कि पूरे भारत से 1000+ रचनाएँ प्राप्त हुईं, जिनमें से चयनित रचनाएँ इस अंक में प्रस्तुत की गई हैं। यह अंक न केवल आपकी रचनाओं का संग्रह है, बल्कि यह हमारे साझा सपनों और आकांक्षाओं का प्रतीक भी है। रचनाओं का चयन करना हमारे लिए एक बड़ी चुनौती थी, क्योंकि आपकी सभी रचनाएँ उत्कृष्ट श्रेणी की थीं। इसी कारण से हमारा नवीनतम अंक महीने के पहले सप्ताह में नहीं निकल पाया। लेकिन हमें यह देखकर संतुष्टि हुई कि आपकी रचनाएँ हमेशा हमारे लिए महत्वपूर्ण रहेंगी और हम उन्हें प्रकाशित करने के लिए निरंतर प्रयासरत रहेंगे। हमारा उद्देश्य आपकी रचनाओं को विश्वभर में प्रसिद्ध करना है और आपको एक मंच प्रदान करना है जहाँ आप अपनी बात रख सकें। हमें विश्वास है कि आपकी रचनाएँ न केवल आपके विचारों को व्यक्त करेंगी, बल्कि वे समाज में सकारात्मक परिवर्तन की दिशा में भी योगदान करेंगी। आपका स्नेह और सहयोग हमें आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है। हम आशा करते हैं कि आप इस अंक को पढ़कर संतुष्ट और उत्साहित होंगे। हमें आप सबके साथ मिलकर एक नई ऊर्जा का संचार करने की आशा है। हमें विश्वास है कि हमारे साझा प्रयासों से हम एक बेहतर भविष्य का निर्माण कर सकते हैं। आपको बताते चले कि प्रान्ति इंडिया द्वारा वाराणसी में 10 जनवरी को विश्व हिन्दी दिवस के अवसर पर हमारी पूरी टीम द्वारा चयनित 51 साहित्यकारों को सम्मानित करने की योजना है। यह समारोह हिंदी साहित्य के लिए एक नए युग की शुरुआत करेगा और साहित्यकारों को उनके कार्य के लिए प्रेरित करेगा। गौरतलब है कि चयन प्रक्रिया में 40 साहित्यकारों की सूची तैयार है, जबकि हिंदी की प्रमुख 11 विधाओं में एक एक साहित्यकार का चयन प्रान्ति इंडिया के संपादन मंडल द्वारा किया जा रहा है। आइए हम सभी मिलकर आगामी 10 जनवरी को वाराणसी में विश्व हिन्दी दिवस को सफल बनाएं। हमें आपके सहयोग और समर्थन की आवश्यकता है। आइए हम सभी मिलकर हिंदी साहित्य के लिए एक नए युग की शुरुआत करें।

संपादक
प्रान्ति इंडिया

समीक्षक : अरुणप्रिय

कौशल पांडे की पुस्तक "संवाद जारी है" एक ऐसी कृति है जो पाठकों को अपने जीवन के अनुभवों और संघर्षों के माध्यम से आकर्षित करती है। इस पुस्तक में लेखक ने अपनी संवेदनशीलता और मानवता की भावना को विशेष रूप से प्रस्तुत किया है, जो पाठकों को गहराई से प्रभावित करती है। पुस्तक के मुख्य बिंदुओं में भारत-चीन युद्ध के दौरान खाद्यान्न संकट का विवरण, बाल साहित्य में योगदान, और लेखक की भाषा और शैली की प्रशंसा शामिल है। लेखक ने अपने स्वाभिमानी पिता और माता के संघर्षों का जिक्र बड़ी संवेदनाओं के साथ किया है, जो पाठकों को उनके जीवन के संघर्षों के करीब लाता है। इस पुस्तक में लेखक ने साहित्य समाज का दर्पण होने की बात कही है, जो मुंशी प्रेम चंद के कथन को झुठलाया नहीं जा सकता। शब्द और बीज (संस्कृति) सदैव जिन्दा रहते हैं, और शब्दों की अमरता को झुठलाया नहीं जा सकता। लेखक ने यह भी कहा है कि शब्दों का प्रयोग शस्त्र रूप में न कर मानवता की रक्षा के लिए होना चाहिए।

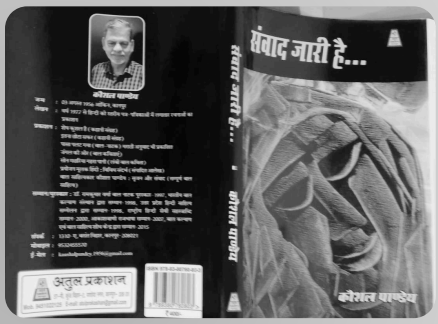

इस पुस्तक की विशेषताएं हैं:

- संवेदनशील और मार्मिक लेखन
- जीवन के अनुभवों का साझा
- बाल साहित्य में योगदान
- आकर्षक भाषा और शैली
- पाठकों के लिए प्रेरणादायक

इस पुस्तक को पढ़ने और समझने से पाठकों को लेखक की संवेदनाओं को समझने में मदद मिलेगी। यह पुस्तक न केवल एक साहित्यिक कृति है, बल्कि एक जीवन के अनुभवों का संग्रह भी है। समीक्षक की राय में, यह पुस्तक पढ़ी जानी चाहिए, समझी जानी चाहिए, और इसके आलेखों के माध्यम से उजागर हुई लेखकीय भावनाओं का स्तंभ बने। यह पुस्तक हमें संवाद के महत्व को समझने का अवसर प्रदान करती है, और हमें अपने जीवन में संवाद को जारी रखने के लिए प्रेरित करती है। इस पुस्तक के माध्यम से, लेखक ने हमें यह भी दिखाया है कि साहित्य कितना महत्वपूर्ण है हमारे जीवन में। साहित्य हमें अपने अनुभवों को साझा करने का अवसर प्रदान करता है, और हमें दूसरों के अनुभवों को समझने में मदद करता है। इस पुस्तक को पढ़ने के बाद, पाठकों को यह एहसास होगा कि संवाद जारी रखना कितना महत्वपूर्ण है। संवाद हमें अपने जीवन में आगे बढ़ने में मदद करता है, और हमें दूसरों के साथ जुड़ने में मदद करता है। इसलिए, यह पुस्तक उन सभी के लिए आवश्यक है जो साहित्य के महत्व को समझना चाहते हैं, और अपने जीवन में संवाद को जारी रखना चाहते हैं।

सहयोग : संपादन मंडल

चित्रकारी

ऊषा शिवहरे, मध्य प्रदेश

निमिषा सिंघल, आगरा

मुकेश जोशी, उत्तराखंड

डॉ. प्रसन्न पतकार, मध्य प्रदेश

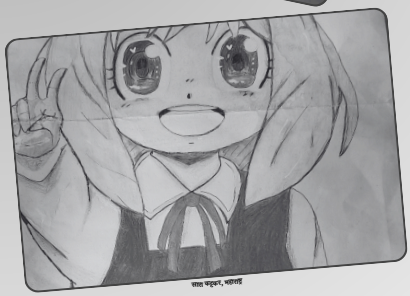

सारा कट्टकर, महाराष्ट्र

आप अपनी चित्रकला कार्यालय में संपादक की eमेल editor@prantiindia.com पर भेज सकते है। साथ में मोबाइल नंबर, अपना पूरा पता व एक फोटो अवश्य भेजें। चयनित पेंटिंग को आपके नाम, पता व फोटो के साथ पत्रिका में प्रकाशित किया जाएगा।

पैनल : डॉ. आरती

डॉ. आरती (पैनल): आज की भेंटवार्ता में हम एक ऐसे महान व्यक्तित्व से आपकी भेंट कराएँगे जो भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय में हिंदी सलाहकार हैं, नागरी लिपि परिषद् दिल्ली के महामंत्री हैं, न्यूयॉर्क अमेरिका से निकलने वाली प्रवासी भारतीयों की प्रतिष्ठित पत्रिका 'सौरभ' के प्रधान संपादक हैं तथा नागरी लिपि परिषद की शोध पत्रिका 'नागरी लिपि' नई दिल्ली से आदरणीय के संपादन में ही निकलती है। स्वागत है डॉ. हरिसिंह पाल जी आपका। आप जैसे ज्ञानी से लगभग हर विषय पर बात की जा सकती है। कोई भी विषय छेड़ा जा सकता है, लेकिन आज की मेरी जिज्ञासा और भेंटवार्ता का जो उद्देश्य प्रवासी साहित्य को लेकर है। मेरा पहला प्रश्न तो आपसे यही है कि प्रवासियों और भारतीयों में हिंदी के प्रयोग को लेकर आप क्या कहना चाहेंगे? हिंदी के स्तर, उसकी स्थिति, उससे प्रेम, उसके प्रचार-प्रसार, इन सब के बारे में हम दो समुदाय अलग-अलग बना चुके हैं कि ये भारतीय हैं और ये प्रवासी भारतीय हैं। इसके परिपेक्ष्य में आपसे जानना चाहेंगे।

डॉ. हरिसिंह पाल: डॉ. आरती जी, सबसे पहले प्रान्ति इंडिया की पूरी टीम का आभार। विशेषकर इस पत्रिका के संपादक प्रसाजी का जिन्होंने साक्षात्कार के लिए हमें आमंत्रित किया। आइए, अब हम चर्चा कर लेते हैं प्रवासी शब्द पर जिसे हम अकसर प्रयोग में लाते हैं। कोई व्यक्ति एक स्थान से दूसरे स्थान पर जब जाता है तब वह प्रवासी है; भले ही वह अल्पकाल के लिए जाए या दीर्घकाल के लिए जाए या किसी भी अन्य कारण से जाए। जहाँ हम प्रवासी साहित्य की बात करते हैं तो जो भारत की अपनी जन्मभूमि को छोड़कर दूसरे देश में गए हैं और वहाँ पर साहित्य की रचना कर रहे हैं वे प्रवासी भारतीय प्रवासी साहित्यकार कहे जाने चाहिए। वैसे ही कई अन्य शब्द हैं, जैसे- एक शब्द 'वासी' हम कहते हैं, उसी के लिए 'नेटिव' है। एक है 'अप्रवासी' जिसका अर्थ है- 'इमिग्रैंट', और एक है- 'प्रवासी' जो कि 'माइग्रैंट' हैं, बसने वाला 'सैटलर' है, 'विदेशी' 'फ़ॉरनर' है। इसके अतिरिक्त कुछ एन.आर.आई. शब्द का इस्तेमाल करते हैं 'नॉन रेजिडेंट इंडियंस' के लिए। यह एक वर्गीकरण हमने उनका कर रखा है कि जो देश से बाहर गए हैं। लेकिन हम प्रवासी साहित्यकार उनको कह रहे हैं कि जिन्होंने अपनी रचनाएँ वहाँ जाकर की हैं। उदाहरण के लिए मैं लूँ कि डॉ. आरती लोकेश यहाँ भारत में जन्मी और शिक्षा दीक्षा हुई, लेखन कार्य किया। अब वे संयुक्त अरब अमीरात में है और वहाँ रह कर उसी तरह से साहित्य रचना में दत्तचित्त हैं और अनेक जो प्रवासी पत्रिकाएँ व संकलन हैं, उनका आपने संपादन किया है। इसी प्रकार अन्य जो साहित्यकार हैं चाहे अमेरिका में हैं, कनाडा में हैं, ब्रिटेन में हैं, मॉरीशस या नॉर्वे में हैं या जापान-ऑस्ट्रेलिया में हैं, प्रवासी साहित्यकार हैं।

सौभाग्य से मैं जब आकाशवाणी में था तो एक कार्यक्रम था- 'हमारे आज के अतिथि'। जब यहाँ भारत में प्रवासी दिवस मनाना शुरू हुआ तो जैसे ही प्रवासी भारतीय दिल्ली आते थे हिंदी वाले तो प्राय: मैं उनकी रिकॉर्डिंग करके ब्रॉडकास्ट करवाया करता था। इस प्रकार मैं प्रवासी भारतीयों के संपर्क में आया। उदाहरण के लिए अमेरिका के डॉ. विजय कुमार मेहता, डॉ वेद प्रकाश सिंह जी, ओमप्रकाश गौड़ प्रवासी और रामेश्वर अशांत जी; इंग्लैंड से हमारे पद्मेश गुप्त, डॉ. कृष्ण कुमार; नीदरलैंड से मोहन कांत गौतम जी, नॉर्वे से श्री सुरेश चंद्र शुक्ल और अन्य देशों से जैसे फिजी, मॉरीशस, त्रिनिडाड, गुआना आदि देशों के जो प्रवासी अब वहाँ के पूरी तरह नागरिक हो गए हैं यहाँ तक कि पूरी तरह से वहाँ के शासन-प्रशासन में उनका बड़ा हाथ है। ये लोग जब भी भारत आते थे, हम उनकी रिकॉर्डिंग करते थे। फिर प्रसारित करके श्रोताओं को सुनवाते थे। 'प्रवासी' शब्द नया शब्द नहीं है। विश्व हिंदी सम्मेलन के लिए डॉ. कमल किशोर गोयनका ने एक पुस्तक का संपादन किया था 'प्रवासी साहित्य जोहान्सबर्ग से आगे'। इसके लिए उन्होंने खोज कर निकाला था कि 1906 में प्रेमचंद जी ने जो कहानी लिखी थी- 'यही मेरी मातृभूमि है' और 1926 में 'शूद्रा' जो उन प्रवासियों पर आधारित थीं, जो मॉरीशस से लौटकर आए। प्रवास से लौटकर उन्होंने अपनी जो कहानियाँ सुनाईं, जो संस्मरण सुनाए, उस पर आधारित ये कहानी उन्होंने लिखी थी। बाद में प्रवासी फिजी के संबंध में तोताराम सनाढ्य ने और पंडित बनारसीदास चतुर्वेदी ने भी लेखन शुरु किया। कहने का तात्पर्य यह है कि प्रवासी साहित्य बहुत पहले से है। यह अब का नहीं है कि कहा जाए यह 20 वीं सदी का है। यह काफी समय से लिखा हुआ है।

हमारा जो साहित्य है खास तौर से जो वैदिक साहित्य है, पूरे विश्व में मान्य है। अनेक लोगों ने उसके अनुवाद प्रस्तुत किए। जैसे जर्मनी के मैक्समूलर ने वेद की रचना को अनुवाद करके पूरे विश्व में उसको फैलाया। इसी प्रकार अन्य विदेशी जो भारत में आए और उन्होंने हमारे साहित्य की और संस्कृति की जो गवेषणा की और उसके माध्यम से पूरे विश्व के सामने रखा। अब चूँकि भारतीय हमारे विभिन्न कारणों से, चाहे आर्थिक कारण हैं, साहित्यिक कारण हैं या सांस्कृतिक कारण हैं, जिस भी कारण से वे विदेश में गए, वे ऐसे रचनाकार है कि जो भारत में थे तब भी लिख रहे थे। मतलब यह नहीं कि वे अमेरिका में गए तब उन्होंने लिखना शुरु किया। उनका जो लेखन है, वह अनवरत है। अब उनकी दूसरी पीढ़ी जो आ रही है यद्यपि वे संख्या में कम हैं, ये हैं जिनका जन्म वहाँ पर हुआ है और वे भी लिख रहे हैं। इस तरीके से विश्व में दोनों धाराएँ हमारे प्रवासी साहित्य की पल्लवित, पुष्पित और विकसित हो रही हैं। अगर हम इसे हिंदी साहित्य की दृष्टि से देखें तो साहित्य में अनेक विमर्श लागू रहे हैं जैसे दलित विमर्श, नारी विमर्श है और अन्य विमर्श। उसी में प्रवासी साहित्य भी एक विमर्श है, इसको विमर्श के रूप में ही लिया जाना चाहिए। कुछ लोग नाक-भौं सिकोड़ते हैं कि साहित्य तो साहित्य है उसे वर्गीकृत क्यों कर रहे हैं। उसे प्रवासी साहित्य क्यों कहा जा रहा है? यह भी तो साहित्य का एक अंग है। उसमें एक विचारधारा यह है कि जो लोग विशेष रूप से वहाँ प्रवास के समय से लिख रहे हैं, जोकि उनका अपना अनुभव भी है, इस रूप में उसे प्रवासी साहित्य कहना बहुत गलत नहीं है। जब प्रवासी साहित्य की हम समालोचना करते हैं तो हम पाते हैं कि प्रवासी साहित्य अब भारतीय विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रम में भी लागू है और भारतीय साहित्य पाठ्यक्रमों का वह अंग बन चुका है।

प्रवासी साहित्य एक अलग तरह का साहित्य है। अगर हम परिभाषा करें 'साहित्य' को, 'जो सहित है' अर्थात् जिसमें हित समाहित है- मानवता का, मानव कल्याण का जिसमें 'हित' निहित है वही साहित्य है। जैसे संत तुलसीदास ने कहा है- 'परहित सरिस धर्म नहीं भाई', तात्पर्य है कि जिसमें परहित की भावना नहीं वह धर्म नहीं। इसे हम दूसरे शब्दों में कह सकते हैं कि जिसमें 'सत्यम् शिवम् सुन्दरम्' की संकल्पना है वही साहित्य शाश्वत साहित्य है। वह चाहे भारत में लिखा जा रहा है या भारत से अन्यत्र लिखा जा रहा है, विदेशों में लिखा जा रहा है।

पिछले वर्ष 2021 से मैंने न्यूयॉर्क से प्रकाशित पत्रिका 'सौरभ' के संपादन का दायित्व सँभाला है, यद्यपि मैं 20-25 साल से प्रवासी भारतीयों के संपर्क में रहा हूँ, उनकी अनेक पुस्तकों की समीक्षाएँ की हैं, जिनमें डॉ. विजय कुमार मेहता, ओम प्रकाश गौड़ 'प्रवासी', डॉ. वेदप्रकाश सिंह जी, सुरेशचंद्र शुक्ल आलोक और डॉ. दाऊजी आदिगुप्त, डॉ. आरती 'लोकेश' गोयल, बघेल 'मधु', स्नेह ठाकुर आदि प्रवासी साहित्यकार शामिल हैं। इन सबकी की पुस्तकों से मैंने जाना है कि प्रवासी साहित्य अब अपनी जड़ जमा चुका है। आप नहीं कह सकते कि ये अभी-अभी आया है तो उसको जड़ें जमाने में समय लगेगा। जड़ें जमाकर वह अब इस स्थिति में आ गया है कि हिंदी साहित्य का एक अनिवार्य अंग अब बन चुका है। अगर हिंदी साहित्य में हम प्रवासी

भारतीयों की रचनाओं को शामिल नहीं करेंगे तो हिंदी साहित्य अधूरा साहित्य ही माना जाएगा। इसीलिए उसको साहित्य की दृष्टि से भी देखना है, मात्र प्रवास की दृष्टि से ही देखना नहीं है। प्रवासी साहित्यकार सभी विधाओं में लिख रहे हैं, विशेष रूप से कविताएँ बहुत ज्यादा लिखी जा रही हैं। कहानियाँ लिखी जा रही हैं, उपन्यास लिख रहे हैं, व्यंग्य भी लिख रहे हैं, संस्मरण भी लिख रहे हैं, डायरी साहित्य भी लिख रहे हैं और यात्रा-संस्मरण भी प्रवासी भारतीय लिख रहे हैं। मैं जब सौरभ का संपादन करता हूँ तो मेरे पास जो रचनाएँ आती हैं, वे अनेक विधाओं में होती हैं और उनमें वही परिपक्वता है, वही प्रौढ़ता है जो भारत के श्रेष्ठतम रचनाकारों में है। ये रचनाएँ किसी भी रूप में, किसी भी तरह से भारत के उच्च शिखर के रचनाकार कहलाए जाने वालों से कमतर नहीं हैं। अब इन पर शोधकार्य भी होने लगा है जैसे आपके साहित्य पर भी तीन विश्वविद्यालय से रोहतक, भटिंडा और कीव से शोध हो रहा है। इसी प्रकार डॉ. विजय कुमार मेहता, जो अमेरिका में जाने-माने कार्डियोलॉजिस्ट हैं, 'सौरभ' पत्रिका के अध्यक्ष हैं, उनके काव्यों पर शोध हुआ है। दरभंगा से उनके लेखन पर पी-एच.डी. हो चुकी है। इसी प्रकार अन्य और बहुत-से प्रवासी साहित्यकारों पर पी-एच.डी. अब होने लगी है। कहने का आशय है कि अब ऐसा बिल्कुल नहीं है कि जो भारत में लिख रहा है, उन्हीं के साहित्य पर पी-एच.डी. होगी। बल्कि मैं तो प्राय: विश्वविद्यालय में जाकर यही कहता हूँ कि प्रवासी भारतीय जो कि साहित्य की रचना कर रहे हैं उनके सामने बड़ी विषम परिस्थिति है, बड़ी कठिन परिस्थिति है। हम कहते हैं कि घर की चौखट लाँघने के बाद वहाँ अपनी संस्कृति नहीं है, अपनी भाषा नहीं है, अपना खानपान नहीं है, अपनी वेशभूषा नहीं है और अपनी यारवासी भी नहीं है। उसके लिए भी आपको उनकी भाषा में ही बात करनी पड़ेगी। ऐसे में उस व्यक्ति द्वारा साहित्य रचना अगर हिंदी में की जा रही है तो यह बहुत बड़ा अवदान है हिंदी साहित्य को समृद्ध करने में प्रवासी भारतीयों का। इस रूप में मैं मानता हूँ कि आजकल जो हमारा प्रवासी साहित्य लिखा जा रहा है- पूरी तरह से प्रौढ़ समृद्ध साहित्य है, परिपक्व साहित्य है और यह हिंदी साहित्य का अनिवार्य और अविभाज्य अंग है।

डॉ. आरती (पैनल): बहुत ही महत्वपूर्ण बात आपने बताई है आदरणीय! साहित्य की मुख्य धारा में प्रवासी साहित्य शामिल है, यह बहुत हर्ष व गर्व की बात है हम सबके लिए। उसको एक मुख्य नदी से कटी हुई अलग धारा कह, उसके साथ कोई पक्षपात नहीं किया जा रहा है। एक तरह से उसको समान रूप से देखा जा रहा है। आपने बिल्कुल मेरा मन पढ़ लिया। मैं यही जानना चाहती थी कि प्रवासी साहित्य और हमारे देश के साहित्य में क्या भिन्नताएँ या समानताएँ हैं। मैंने सोच रखा था कि आप से पूछूँगी। आपने इसका उत्तर बहुत विस्तार से मुझे दिया। अब आगे यह जानने की इच्छा है कि जैसे आप भारत सरकार की हिंदी सलाहकार समिति में भी हैं, उसके माननीय सदस्य हैं। यह बताइए कि प्रवासी साहित्य को आगे लाने के लिए सरकार की तरफ से क्या-क्या प्रयास किए जा रहे हैं या आगे क्या योजनाएँ बनाई जा रही हैं?

डॉ. हरिसिंह पाल: सरकार की तरफ से पहले से ही कई तरह की योजनाएँ लागू हैं। उदाहरण के तौर पर हम प्रवासी दिवस मनाते हैं और 10 जनवरी को 'विश्व हिंदी दिवस' मनाते हैं। भारत सरकार का विदेश मंत्रालय इसमें पूरा सहयोग करता है। विदेश मंत्रालय में विशेष रूप से जो भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद ('इंडियन काउंसिल ऑफ कल्चरल रिलेशन') है, वह पूरी तरह से इसमें सहयोग करता है। बल्कि आप ये देखेंगे जो विदेशों में हिंदी पढ़ाने के लिए यहाँ से प्राध्यापक भेजे जाते हैं और लगभग सभी देशों में जहाँ-जहाँ हिंदी पढ़ाई जा रही है वहाँ-वहाँ ये आई.सी.सी.आर. प्राध्यापकों को भारत से वहाँ पर भेजता है। दूसरा है कि 'गगनांचल' जो पत्रिका भारत सरकार की प्रकाशित होती है उसमें भी प्रवासी भारतीयों की चुनिंदा रचनाओं का प्रकाशन होता है। विश्व हिंदी सम्मेलन जब भी होते है उसमें 'विश्व हिंदी सम्मान' दिया जाता है जिसमें भारतीयों के साथ-साथ प्रवासी भारतीयों और विदेशी हिंदी सेवियों को भी सम्मानित किया जाता है। हमारी संस्था 'नागरी लिपि परिषद' को यह सौभाग्य प्राप्त है कि उससे भी सम्मान के लिए कुछ नाम माँगे जाते हैं। परिषद के महामंत्री के नाते मैंने यह सोशल मीडिया पर पोस्ट किया तो लगभग 40 लोगों के आवेदन प्राप्त हुए। उसमें अमेरिका, श्रीलंका के भी लोग थे भारत और अन्य देशों के भी थे। अर्थ यह है कि भारत सरकार की ओर से यह योजना है कि जो प्रवासी भारतीय साहित्य लिख रहे हैं उसका भी उतना ही महत्त्व आँका जाए, उनको उतना ही महत्त्व मिले जितना कि भारतीय साहित्यकार को मिल रहा है।

जब से मैं न्यूयॉर्क से प्रकाशित 'सौरभ' पत्रिका का संपादन कर रहा हूँ, तब से मेरा अपना मानना यह है कि भारत सरकार की जो पत्रिकाएँ या पुस्तकें प्रकाशित हो रही हैं, उन्हें प्रवासी पुस्तकों या पत्रिकाओं को भी अनुदान देना चाहिए। शिक्षा मंत्रालय का 'केंद्रीय हिंदी निदेशालय' है वह भारत के लेखकों को अनुदान देता है। इसकी समिति का मैं भी अनेक बार सदस्य रहता हूँ। जो साहित्य लिख रहे हैं हिंदी का, उसे अनुदान दिया जाता है। इस तरह से यह भारत सरकार की योजना भारतीय लेखकों के लिए है। मेरा अपना कहना यह है कि जो प्रवासी भारतीय लिख रहे हैं, उनको भी इसी प्रकार का अनुदान दिया जाना चाहिए, उन्हें भी पुस्तक प्रकाशन के लिए आर्थिक सहयोग मिलना चाहिए। इससे उनका प्रकाशन अच्छी तरह से हो सके, उन्हें किसी प्रकार का तो संकट का सामना न करना पड़े। प्राय: प्रकाशकों की रुचि पैसा कमाने में होती है। वे लोग यह नहीं देख रहे कि प्रवासी भारतीय भी उसी रूप में हैं। भारत में रह करके प्रकाशित करा रहे लेखकों की ही तरह वे भी अपनी खून-पसीने की कमाई, खर्च करके अपना साहित्य प्रकाशित करा रहे हैं। उनको कहीं से कोई भी, अमेरिका सरकार या यू.ए.ई. सरकार थोड़े ही अनुदान दे रही है। उनको इस दुविधा से निजात मिले, इसके लिए भारत सरकार को इस पर ध्यान देना चाहिए। इसके लिए मैंने चर्चा भी की है, अपने मंत्रालय में भी मैं चर्चा करूँगा। और जो अन्य विभाग हैं जैसे शिक्षा मंत्रालय का केन्द्रीय हिंदी संस्थान है, उनसे भी मैंने कहा है तो उन्होंने स्वीकार किया है कि वे 'प्रवासी जगत' पत्रिका प्रकाशित कर रहे हैं। उनको भी अनुदान दिया जाए दिया जाए जिस प्रकार कि वे भारत में प्रकाशित हिंदी पत्र-पत्रिकाओं के लिए अनुदान देते हैं। अन्य माध्यमों से भी हम विदेश मंत्रालय और भारत सरकार तक इस बात को पहुचाएँगे कि प्रवासी भारतीयों को पुस्तक प्रकाशन के लिए और पत्रिका प्रकाशन के लिए उसी प्रकार अनुदान दिया जाना चाहिए, जिस प्रकार हमारी सरकार भारत में भारतीय रचनाकारों को दे रही है। इस समय वर्तमान जो हमारी सरकार है, वह बड़ी जागरूक है। वह निश्चय ही इस ओर ध्यान देगी, ऐसा मेरा विश्वास है और मैं इसके लिए पूरी तरह आशावान हूँ।

डॉ. हरिसिंह पाल: सरकार की तरफ से पहले से ही कई तरह की योजनाएँ लागू हैं। उदाहरण के तौर पर हम प्रवासी दिवस मनाते हैं और 10 जनवरी को 'विश्व हिंदी दिवस' मनाते हैं। भारत सरकार का विदेश मंत्रालय इसमें पूरा सहयोग करता है। विदेश मंत्रालय में विशेष रूप से जो भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद ('इंडियन काउंसिल ऑफ कल्चरल रिलेशन') है, वह पूरी तरह से इसमें सहयोग करता है। बल्कि आप ये देखेंगे जो विदेशों में हिंदी पढ़ाने के लिए यहाँ से प्राध्यापक भेजे जाते हैं और लगभग सभी देशों में जहाँ-जहाँ हिंदी पढ़ाई जा रही है वहाँ-वहाँ ये आई.सी.सी.आर. प्राध्यापकों को भारत से वहाँ पर भेजता है। दूसरा है कि 'गगनांचल' जो पत्रिका भारत सरकार की प्रकाशित होती है उसमें भी प्रवासी भारतीयों की चुनिंदा रचनाओं का प्रकाशन होता है। विश्व हिंदी सम्मेलन जब भी होते है उसमें 'विश्व हिंदी सम्मान' दिया जाता है जिसमें भारतीयों के साथ-साथ प्रवासी भारतीयों और विदेशी हिंदी सेवियों को भी सम्मानित किया जाता है। हमारी संस्था 'नागरी लिपि परिषद' को यह सौभाग्य प्राप्त है कि उससे भी सम्मान के लिए कुछ नाम माँगे जाते हैं। परिषद के महामंत्री के नाते मैंने यह सोशल मीडिया पर पोस्ट किया तो लगभग 40 लोगों के आवेदन प्राप्त हुए। उसमें अमेरिका, श्रीलंका के भी लोग थे भारत और अन्य देशों के भी थे। अर्थ यह है कि भारत सरकार की ओर से यह योजना है कि जो प्रवासी भारतीय साहित्य लिख रहे हैं उसका भी उतना ही महत्त्व आँका जाए, उनको उतना ही महत्व मिले जितना कि भारतीय साहित्यकार को मिल रहा है।

डॉ. आरती (पैनल): आदरणीय, आपकी बातो से बहुत बहुत आश्वस्ति मिली है। हम यहाँ पर जो दूसरे देशों में बैठकर लिख रहे हैं तो उसके प्रकाशन के लिए बहुत ही बड़ी समस्या हमारे सामने आती है प्रकाशन की। बाहर तो हम प्रकाशन करवा ही नहीं पाते। यू.ए.ई. में हिंदी की पहली पुस्तक निकली थी 'सोच', जिसका संपादन भी मैंने किया था, यू.ए.ई. में ही उसका प्रकाशन भी करवाया गया। यहाँ पर उसका प्रकाशन करना बहुत खर्चीला सौदा है। अनुदान की ऐसी कुछ व्यवस्था हो और हमें उसका पता चले हमारे जैसे लोगों के लिए, सारे ही प्रवासी लेखकों के लिए उत्साह व उल्लास का क्षण होगा। जिस किसी को भी अनुदान मिल जाए, उसके लिए बहुत बड़ी खुशखबरी रहेगी और अन्य के लिए आशा की किरण होगी।

डॉ. हरिसिंह पाल: इस संबंध में यह भी जोड़ना चाहूँगा कि हमारे जो प्रवासी भारतीय इस समस्या से जूझ चुके हैं उन्होंने भी वहाँ प्रकाशन खोल दिया है। मेरे मित्र कनाडा में हैं गोपाल बघेल मधु, उन्हीं के 'मधु प्रकाशन' से मेरी पुस्तक प्रकाशित हुई थी- 'हिंदी के ध्वजवाहक: डॉ. दाऊजी गुप्त'। इसी प्रकार अन्य लोग भी प्रकाशन के क्षेत्र आ गए हैं। यद्यपि समस्या वही है कि वहाँ पर महँगाई तो अधिक है ही। साथ में ये मेरे सामने समस्याएँ आती रही हैं कि यदि हम प्रकाशित भारत में ही करें और भारत से बाहर उस पुस्तक को या पत्रिका को भेजें तो डाक खर्चे का इतना महँगा सौदा हो जाता है कि जितने की पुस्तक छपी है उतना उसकी पोस्टेज में लग जाता है। कुछ इस तरह की और भी समस्याएँ है जिन्हें हम विदेश मंत्रालय के ध्यान में लाएँगे। वहाँ जो एक प्रवासी डेस्क है, उन तक हम इस बात को पहुचाएँगे। वहाँ भी हमारे मित्र बैठे हुए हैं तो निश्चित रूप से इस समस्या का कुछ न कुछ समाधान निकलेगा। ये जो समस्या आ रही है प्रवासी भारतीयों को उससे इनको निजात मिलेगी। भले ही चाहे पुरस्कार के रूप में हो या अनुदान के रूप में हो, ऐसा हम सोचते हैं कि निकट भविष्य में बहुत ही शीघ्र इस पर भारत सरकार के द्वारा निर्णय लिया जाएगा। इससे जो प्रवासी भारतीय हैं वे अपनी रचनाओं का प्रकाशन कर सकेंगे। अभी तक क्या हो रहा है डॉ. आरती जी, कि जितने भारतीय हैं, उनके एकजुट होने की ज़रूरत है। जैसे कि मेरे पास पुस्तक है ये डॉ. उषा राजे सक्सेना की 'देशांतर', उन्होंने प्रवासी भारतीयों की कविताएँ प्रकाशित कीं तो हिंदी अकादमी, दिल्ली सरकार ने उसमें सहयोग दिया तब जाकर यह पुस्तक प्रकाशित हो पाई। यदि इस तरह के छोटे छोटे प्रयास हों, 'हिंदी अकादमी', 'केंद्रीय हिंदी निदेशालय', 'केंद्रीय हिंदी संस्थान', 'उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान'; इस तरह की संस्थाएँ आसानी से अनुदान दे सकती हैं, जिससे प्रवासी भारतीयों की पुस्तकें और उनकी रचनाएँ अच्छी तरह से प्रकाशित हो सकती हैं।

डॉ. आरती (पैनल): बढ़िया जानकारी प्रकाशन व अनुदान संबंधी आपसे मिली। आपने पहले बताया कि प्रवासी साहित्यकारों की जो समस्याएँ होती है कि वे अपने देश की धरती से दूर हैं, अपनी संस्कृति से दूर हैं, और शायद अपनी जड़ों से जुड़े रहने के लिए वे लेखन की तरफ प्रवृत्त होते हैं तो जो प्रवासी भारतीय हैं वे अपने लेखन में संस्कृति को किस प्रकार दर्शा रहे हैं? क्या उनकी संस्कृति में विदेशी संस्कृति की झलक दिखाई देती है? प्रवासी भारतीयों की और भारतीयों की संस्कृति के विषय में आपका क्या मानना है?

डॉ. हरिसिंह पाल: इसमें भी दरअसल दो विचारधाराएँ हैं। अभी पिछले दिनों एक साहित्य अकादमी में प्रवासी साहित्य पर चर्चा हुई थी। जो प्रवास में जो लोग गए थे, वहाँ आये थे। उन्होंने अपने संस्मरण सुनाए थे। एक विद्वान का कहना था कि जो प्रवास की परिस्थितिजन्य समस्याएँ हैं वे अगर उनके साहित्य में आती हैं, यानि उनका जो खानपान है, जो संस्कृति है, जो दिक्कतें-मुश्किलें या संघर्ष हैं, वे अगर उसमें प्रदर्शित हो रही हैं तो प्रवासी साहित्य कहा जाएगा। जबकि मेरा ऐसा मानना है कि प्रवासी भारतीय चाहे वह भारतीय संस्कृति पर भी लिखे, वह भी प्रवासी साहित्य की श्रेणी में आना चाहिए। प्रवासी भारतीय वहाँ लिख रहे हैं- भारतीय तीज-त्योहारों के बारे में लिख रहे हैं, भारत के तीर्थस्थलों के बारे में लिख रहे हैं, तो ये बातें भी इस प्रकार वहाँ तक पहुँच रही हैं, फैल रही हैं जो साहित्य-प्रचार का एक अंग है। चाहे कहानी, कविता या अन्य विधाएँ हों, उनमें अगर भारतीयता की छवि है तो यह कोई अवगुण नहीं है। यह प्रवासी साहित्य का एक गुण ही माना जाना चाहिए कि भारतीय संस्कृति की सुवास आप लोग अपने साहित्य के माध्यम से भारत से बाहर दूसरे देश में, उसके लोगों तक पहुँचा रहे हैं। यह बड़ी बात है इसलिए इसको इस रूप में वर्गीकृत नहीं करना चाहिए कि प्रवास की समस्याएँ आएँगी तो ही प्रवासी साहित्य है। समस्याओं की अपनी जगह है। उन्हें लेकर हमारे जो हमारे मन-मस्तिष्क में जो भारतीयता और भारतीय संस्कृति समाहित है, वह आना तो अवश्यम्भावी है। उदाहरण के लिए मेरे मित्र डॉ. विजय कुमार मेहता बहुत बड़े कार्डियोलॉजिस्ट है न्यूयॉर्क में, उन्होंने 'भिक्षुणी' महाकाव्य लिखा 500-550 पृष्ठ का। भले ही उसका परिदृश्य भारतीय है, उसकी पृष्ठभूमि भारतीय है लेकिन लेखन तो वे वहाँ पर अमेरिका में रहकर कर रहे हैं। यह सिद्ध करता है कि अमेरिका में रहकर भी वे भारतीय संस्कृति को भूले नहीं हैं। भारतीयता की जड़ों को वे और विकसित, पुष्पित व पल्लवित कर रहे हैं, आगे बढ़ा रहे हैं जिससे भारतीयता का वटवृक्ष सदा-सदा फला-फूला रहे। इसी रूप में उसको हम नकार नहीं सकते। उसी तरह से बहुतों ने कविता लिखी। जैसे एक ने लिखा कि 'अमेरिका मेरी हड्डियों में बसता' है। वे कहते हैं कि अमेरिका में रहते हुए यह मेरी हड्डियों में घुस गया है, बावजूद इसके मैं भारतीय हूँ। आत्मा भारतीय ही है।

पिछले दिनों अमेरिका के शिकागो से एक कार्यक्रम हुआ जिसका मुझे मुख्य अतिथि बनाया गया। वहाँ हमारे प्रवासी भारतीयों के बच्चे, तीसरी पीढ़ी के छोटे-छोटे बच्चे हिंदी गीत सुना रहे थे। ठीक उससे पहले 'फ़िलाडेल्फ़िया' में कार्यक्रम हुआ 15 अगस्त को। उसमें 8-10 देशों के बच्चों ने हिंदी के गीत, फिल्मों के गीत और हिंदी की कविताएँ सुनाईं। अच्छा लगता है कि वे अपनी संस्कृति को भूले नहीं हैं। अभिभावकों का श्लाघनीय प्रयास है कि वे अपने बच्चों को भारतीय संस्कृति से जोड़े रखना चाहते हैं। साहित्य, कविता, कला, संगीत के माध्यम से वे ये काम कर रहे हैं, यह सराहनीय बात है। भारतीयता का इस रूप में प्रचार-प्रसार ही हो रहा है। बाहर से जो प्रवासी साहित्य हम कह रहे हैं, वह उसी प्रकार का साहित्य जो कि यहाँ भारत में लोग लिख रहे हैं। मैं कुछ लोगों के नाम खास तौर से लेना चाहूँगा जो भारत में पहले लिख रहे थे फिर बाद में बाहर जा कर लिखने लगे। जैसे उषा प्रियंवदा, सोमा वीरा, गुलाब खण्डेलवाल, पी. जयरामन, वेद प्रकाश बटुक, ओंकारनाथ श्रीवास्तव, कृति चौधरी, सत्येंद्र श्रीवास्तव, नरेश भारतीय, गौतम सचदेव, सोहन राही, कैलाश बुधवार, मोहनकांत गौतम, वेद प्रकाश सिंह, रामेश्वर अशांत, विजय कुमार मेहता, पद्मेश गुप्त हैं। उसी प्रकार जिन्हें गिरमिटिया देश कहते हैं वहाँ से अभिमन्यु अनत, वासुदेव विश्वदयाल, प्रह्लाद रामशरण, सोमदत्त बरबौरी, धर्मवीर वोहरा, वीरसेन जाधवसिंह, रामदेव धुरंधर, रामदीन, हीरामन, भुवनेश्वर सोनी, मुंशी रहमान खान, कमलाप्रसाद मिश्र, विवेकानंद शर्मा हैं। इसके अलावा वहाँ के गौरांग मूल यानि ब्रिटेन के लोग, उन्होंने भी हिंदी में लिखा है। जैसे- रूपर्ट स्नेल, अमेरिका के चार्ल्स वाइट, जर्मनी के लोहार लुत्से, चेकोस्लोवाकिया के आदोनेव स्मेकल, रूस के वारालिकोव, वी चेहीशेव, जापान के के. दोई, तोमिओ मिजोकामी हैं। इस तरह से ये हिंदी में लिख रहे हैं तो ये हिंदी का फलक वैश्विक स्तर पर अपना विस्तार पाता जा रहा है। जो प्रवासी साहित्य लिखा जा रहा है, वह भी शाश्वत साहित्य है। वह भी सत्यम् शिवम् सुन्दरम् की परिणति कर रहा है।

डॉ. आरती (पैनल): बहुत-बहुत विस्तृत! बड़ी अच्छी जानकारी मिली है आज। एक बार मुझसे भी यह प्रश्न पूछा गया था कि आप अपने आप को साहित्यकार मानते हैं कि प्रवासी साहित्यकार। तब मुझे यह शंका थी कि प्रवासी साहित्यकार कहा किसे जाए। जो देश में रह के बाहर के बारे में लिख रहा है? बाहर रहकर देश के बारे में लिखता है? बाहर रहकर बाहर के बारे में लिख रहा है? आपने प्रवासी साहित्यकार और प्रवासी साहित्य का जो विस्तृत पलक बताया, सुनकर बड़ा अच्छा लगा। आपको भी जानकर खुशी होगी कि टैगोर यूनिवर्सिटी के विश्वरंग महोत्सव के कार्यक्रम के अंतर्गत ही हमारे यहाँ पर हमारा एक सत्र है जिसमें 8 से 18 साल तक के बच्चे यू.ए.ई. विषय पर स्वरचित कविताएँ सुनाएँगे। यह उनके लिए प्रतियोगिता भी है, काव्य पाठ भी और रचनाएँ बच्चों ने खुद रची हैं। इससे पहले भी विश्व हिंदी सचिवालय के लिए बच्चों ने कविताएँ लिखी थीं। बहुत ही अच्छी कविताएँ थी। उनको संकलित कर 'होनहार बिरवान' नामक पुस्तक की संरचना की गई। एक और भी बात मैं बताना चाहूँगी कि 'अनन्य यू.ए.ई.' का नवम्बर-दिसम्बर अंक पूरा का पूरा भारतीय संस्कृति को समर्पित है। भारतीय संस्कृति हम कैसे यू.ए.ई. में फैला रहे हैं, तमिलनाडु वाले नवरात्रि में गोलू कैसे मनाते हैं, ओणम कैसे हम यहाँ पर मनाते हैं, कोजागिरी पूर्णिमा मराठी लोग कैसे मना रहे हैं, ये सारी भारतीय संस्कृति इस अंक में मिलेगी।
एक अंतिम प्रश्न आपसे जो पूछना चाहूँगी कि जो हमारी युवा पीढ़ी है, जो प्रवासी है और धीरे-धीरे साहित्य की तरफ प्रवृत्त हो रही है। उन्हें आप क्या संदेश देना चाहेंगे कि वे किस तरह से लेखन करे, किन-किन बातों का ध्यान रखें लेखन में, लेखन में क्या लिखना चाहिए, किस तरह से वे आगे बढ़ें? उनको क्या संदेश आप देंगे?

डॉ. हरिसिंह पाल: देखिए डॉ. आरती जी, मैं संदेश देने की स्थिति में नहीं हूँ। मैं तो आग्रह ही कर सकता हूँ नई पीढ़ी के रचनाकारों से, प्रवासी भारतीयों से। संदेश देने के लिए तो और महान लोग हैं। यह अवश्य कहना चाहूँगा कि प्रवासी भारतीय जो भी जिस विधा में लिख रहे हैं लेकिन लिखने से पहले वे अन्य साहित्यकारों की रचनाएँ जरूर पढ़ें। जो समकालीन रचनाकार हैं उनकी, कुछ भारतीय रचनाकारों की रचनाएँ भी पढ़नी चाहिए। कविता, कहानी, उपन्यास कुछ भी लिख रहे हैं तो पहले पढ़ना ज़रूरी है। उदाहरण के लिए मैं बताऊँ कि मैं जब आज मैं ये जो बात कह रहा हूँ मेरे पास में 25 पुस्तकों का ढेर लगा हुआ है चारों तरफ़।

मैं उसके आधार पर कहता हूँ, बनाकर बात नहीं कह रहा। जब तक हम दूसरों की रचनाएँ नहीं पढ़ेंगे, तब तक हम अपना आकलन नहीं कर पाएँगे कि हम कहाँ पर हैं, हमारा स्तर क्या है। दूसरों की जब रचनाएँ पढ़ेंगे, उससे हमारी शब्दावली सुदृढ़ होती है, सशक्त बनती है, हमें नई-नई शब्दावली सीखने को मिलती है। आप जहाँ भी रहे हैं, जिस देश में रह रहे हैं, उस देश की एक झलक भी साहित्य में आनी चाहिए। अन्यथा कोई अंतर नहीं रह जाएगा कि यही भारत में लिख गए और यही बाहर, दोनों ही एक जैसे हैं। उस में और इस में थोड़ा-बहुत तो फर्क होना चाहिए। समभाव-सद्भाव अथवा 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की बात उसमें आनी चाहिए। जो मानवीय संवेदनाएं हैं, पूरे विश्व में रहेगी ही। मैं समाज-मनोविज्ञान का विद्यार्थी रहा हूँ तो जानता हूँ कि मानवीय संवेदना विश्व के किसी भी कोने में बैठे व्यक्ति में रहेगी ही। उसमें हर्ष भी है, उसमें विषाद भी है, उसमें दुख भी है, उसमें प्रसन्नता भी है, उसमें प्रेम भी है। हमारी जो नौ मूल प्रवृत्तियाँ (रस) कही जाती हैं, उसमें मिलेंगी ही।

आप जब वहाँ यू.ए.ई. में रह रही हैं तो निश्चित रूप आपके पड़ोसी, भले ही भारतीय नहीं है, यू.ए.ई. के ही हैं, आपका उनसे जो मित्रता का एक नाता बन जाता है, उस पर आधारित कविताएँ आएँगी ही। उस पर आधारित कहानी आएगी या उपन्यास आएगा, उसकी मूल्यवत्ता ज्यादा होगी। उससे प्रवासी साहित्य अधिक सुदृढ़ बन सकेगा। वहाँ की जो संस्कृति है, वहाँ जो एक मेल-मिलाप की भावना है, भाईचारा है, उसके उदाहरण कई मिलेंगे। इसके विपरीत भावना के उदाहरण कम ही मिलेंगे। भ्रातृत्व भाव के अनेक उदाहरण होंगे चाहे आप किसी भी देश में रहें, चाहे आपकी कोई भी बोली-भाषा-संस्कृति-खानपान या वेशभूषा हो। उसमें जो 'बहनापा' जुड़ जाता है, वह हमारे साहित्य में भी आना चाहिए तो ही वह प्रवासी साहित्य कहा जाएगा।

मैं तो बहुत ही आशान्वित हूँ कि जो नए-नए रचनाकार हैं, जो विदेश गए हैं युवा पीढ़ी के, वे भी अच्छी रचनाएँ कर रहे हैं। मेरे पास अनेक नए रचनाकारों की रचनाएँ आती हैं जिसमें कविताएँ, कहानी सभी विधाएँ हैं। जब सौरभ के लिए मैं रचना माँगता हूँ तो वे स्वयं भेजते हैं। अच्छा लगता है कि वह भी दत्तचित्त हो कर हिंदी साहित्य रचना कर रहे हैं। उन्हें किसी प्रकार का संदेश देने की आवश्यकता नहीं है, उनसे आग्रह ही किया जा सकता है कि समकालीन रचनाकारों के साहित्य का अध्ययन और अनुशीलन अवश्य करें तो उससे उनका साहित्य भी समृद्ध होगा। धन्यवाद!

डॉ. आरती (पैनल): आपने इतने विस्तृत जानकारी दी और पूरा प्रवासी साहित्य हमारे सामने खोल कर रख दिया। प्रश्न पूछे बिना अपने उत्तर में स्वयं ही बता दिया कि कौन-कौन से प्रवासी साहित्यकार हैं, जिन्हें हमें पढ़ना चाहिए। मैं आपका जितना धन्यवाद करूँ, उतना कम है। मैंने आपके संपादन में निकली 'सौरभ' पत्रिका पढ़ी है। उसमें आपका संपादकीय बार-बार पढ़ा। वह मुझे भा गया। सारा संपादकीय प्रवासी साहित्य और प्रवासी भारतीयों के लिए था। आपका साक्षात्कार हम सभी प्रवासियों के लिए बहुत लाभदायक है। आपका संदेश प्रान्ति इंडिया के माध्यम से युवा पीढ़ी तक जरूर पहुँचेगा। यह पूरे यू.ए.ई. में, भारत में, बल्कि सारे विश्व में प्रसारित होगा।

डॉ. आरती 'लोकेश'
दुबई, यू.ए.ई.

मानवता की प्रतिध्वनियाँ

समय की धारा में, धागे आपस में गुंथे हुए हैं,
एक साथ बुनी हुई जिंदगियाँ, एक दिव्य आकार।

हँसी गलियों में गूँजती है, एक क्षणभंगुर ध्वनि,
कंक्रीट की दरारों में आशा खिलती है, अप्रतिबंधित।

पुराने लोगों की फुसफुसाहट से, ज्ञान बहता है,
शहर के दिल में, जहाँ नदी जाती है।

सपने धुएँ की तरह उठते हैं, गोधूलि की गोद में,
साहस की कहानियाँ, हर चेहरे पर उकेरी हुई।

छाया और रोशनी में, हम अपने दिनों में नृत्य करते हैं,
अनेक तरीकों से अर्थ की खोज करते हैं।

हाथ एकता में बंधे हुए, रात को चुनौती देते हुए,
हम एक साथ खड़े हैं, दिल उज्ज्वल रूप से जल रहे हैं।

पहाड़ टूट सकते हैं, और समुद्र दहाड़ सकते हैं,
फिर भी प्यार अटल रहता है, हमेशा उड़ान भरने के लिए।
जीवन की आपाधापी में, हम अपना खुद का गीत खोज लेते हैं,
एक ऐसा राग जो हम सभी के लिए बुना गया है।

हर आंसू के लिए, अनुग्रह की एक नदी,
मानव जाति में शक्ति का एक प्रमाण।

दुख की घाटियों और खुशी की चोटियों के माध्यम से,
हम प्रकाश के विस्तार में उठते और गिरते हैं।

हम जो कहानियाँ साझा करते हैं, जो बोझ हम उठाते हैं,
उनमें हमारा सार निहित है, एक ऐसा संबंध जो बहुत दुर्लभ है।

हँसी और दर्द के माध्यम से, खुशी और निराशा में,
हम आशा के पुल बनाते हैं, एक ऐसी दुनिया जिसे हम सभी साझा करते हैं।

तो आइए याद रखें, जैसे-जैसे समय आगे बढ़ता है,
मानवता के दिल में, हम कभी अकेले नहीं होते।

दया की गूँज में, प्यार के कोमल बोलबाले में,
हम अपना सच्चा स्व पाते हैं, चाहे कुछ भी हो।

हम साथ-साथ यात्रा करते हैं, गहराई और ऊँचाई के माध्यम से,
आत्माओं की एक सिम्फनी, रातों को प्रज्वलित करती है।
अपने सपनों की गोद में, हम हमेशा रहें,
मानवता के सागर में, आशा का प्रतिबिंब।

डॉ0 बृजेश कुमार गुप्ता 'मेवादेव'
बाँदा (उत्तर प्रदेश)

चरित्र

चरित्र को संभाल रख
तू खुद को बेमिसाल रख
खुदा ने जो दिया है नूर
उसको बरकरार रख।

जवां दिलों की धड़कनों से
बोल धड़के देश हित
प्रेम प्यार हो भरा
भेद भाव से रहित
न कोई द्वेष कोई बैर
कोई तू बवाल रख
खुदा ने जो दिया है नूर
उसको बरकार रख।

कार्य करने हैं बड़े
तू सोचे क्या खड़े खड़े
थाम कर्म की ध्वजा
न पूर्ण हों पड़े पड़े
कर्म पथ पे चल जरा
श्रम की तू मशाल रख
खुदा ने जो दिया है नूर
उसको बरकरार रख।

खाली जो दिमाग हो
शैतानियों का वास हो
हैं कुकर्म बढ़ रहे
देखो बेहिसाब हो
तज इसे वक्त रहते
मन में न मलाल रख
खुदा ने जो दिया है नूर
उसको बरकार रख।

उन्नति का मार्ग चुन
संस्कृति के सपने बुन
बनना विश्व गुरु तुम्हें
इंसा पहले बन तू सुन
हम के संग कदम बढ़ा
न मैं का तू ख्याल रख
खुदा ने जो दिया है नूर
उसको तू सम्हाल रख।

लाज की तो बात है
घृणित जो प्रेम पाश है
प्रेम त्याग का प्रतीक
क्यों छीनने की साध है
मीरा राधा प्रेम सी
तू भी तो मिसाल रख
खुदा ने जो दिया है नूर
उसको तू संभाल रख।

डॉ रश्मि लता मिश्रा
सेवा निवृत शिक्षिका
डी ए वी वसंत विहार कॉलोनी,
बिलासपुर, छत्तीसगढ़

भटके मुसाफ़िर

वो कांटों भरे रास्ते याद आए।
मगर हम ने गम ना किसी को बताए।

वो करते रहे बात दिन रात हम से,
मगर बात दिल की कभी कह ना पाए।

सितारों की माफिक करो रौशनी गर,
तो भटके मुसाफिर भी घर लौट आए।

वो आ कर निसदिन हमारे घरों में,
हमारे ही हक में दुआ कर के जाए।

ना रस्ता पता है ना रहबर है कोई,
वो कैसे भला मंजिल अपनी को पाए।

हमें भी मिले गी जहाँ भर की खुशियाँ
अगर रब करिश्मा हमें भी दिखाए।

रखे ताज़ दुनिया उसी के ही सिर पर,
गरीबों को जो ना है आँखें दिखाए।

कर्ण जैसा दोस्त बन के दिखा तू,
कटा के जो सर दोस्ती को निभाए।

यक़ीनन मिलेगी सफलता तुझे भी
करे काम अगर तू पसीना बहाए।

ना शब्दों की लय ना ही भावों का पानी,
वो गज़लों को अपनी भला कैसे गाए।

खताएं वही कर सके माफ सब की,
मुहब्बत को अपने जो दिल में बसाए।

मुहब्बत कृष्ण की वही पा सकेगा,
सुदामा के जैसा जो बन के दिखाए।

दिया कोई ऐसा जला 'लेख 'अब तू,
जो जल कर जहाँ को है रस्ता दिखाए।

डॉ. लेखराज
पंजाब

श्याम

चंदन केसर भाल सजे अरु,
मस्तक ताज सुशोभित श्याम।
नंदन लालन पालन सेवत,
देखत यशुमति मोहित श्याम।।

नैनन काजर सोह रहा अरु,
ओठ गुलालन सोहत श्याम।
आभ लिये मुख मंडल ऐसन,
जैसन सूरज होवत श्याम ॥

सुंदर सूरत नास्य सजी अरु , भौं
कजरी-कजरी अति श्याम।
माखन ठुड्डी यों चिपका है, ज्यों
पिपुही धरिया गति श्याम॥

डोर सभी की हाथ लिए अरु,
खेलत, पकड़त, छोड़त श्याम।
बंध कटी पर बांध रखी यों ज्यों
भवसागर बांधत श्याम।।

चंदन केसर भाल सजे अरु,
मस्तक ताज सुशोभित श्याम।
नंदन लालन पालन सेवत,
देखत यशुमति मोहित श्याम।।

ललिता शर्मा 'नयास्था'
भीलवाड़ा, राजस्थान

सूरज की पाती

सूरज ने पाती लिखी, देख रात का रूप।
खिड़की खुलते ही गिरे,एक लिफाफा धूप।। 1
माँ आँगन में है खड़ी,बनके सुख की भोर।
सोचेगा सौ बार दुख, आने को इस ओर।। 2
ऊँचाई के दम्भ पर, उड़ा नहीं उपहास।
पर्वत तू भी जान ले, खाई का इतिहास।। 3
हिन्दी उर्दू के यहाँ, जो हैं पैरोकार।
उनके घर की आबरू, अंग्रेजी अख़बार।। 4
एकलव्य तो आजकल, यूँ करता अभ्यास।
काट अंगूठा द्रोण का, बदल रहा इतिहास।। 5
देश तरक्की कर रहा, कैसे हो विश्वास।
चार भिखारी बढ़ गए, फिर सिंग्नल के पास।। 6
झूठ बोलकर हो गया, मुझको इतना ज्ञान।
सच कहने से अब यहाँ, केवल है नुकसान।। 7
रात ज़रा आँधी थमी, खोला रोशनदान।
गमलों ने मुझसे कहा, खो बैठे पहचान।। 8
चिड़ियों की चौपाल में, पंच बने हैं बाज।
ऐसे में उन पर यहाँ, तय है गिरनी गाज़।। 9
जुगनू का जबसे हुआ, सूरज से गठजोड़।
तबसे वो भी रात की, बाहें रहा मरोड़।। 10
बरसे पूरी रात भर,बादल ऐसे आज।
तानसेन ने छू लिया, जैसे कोई साज़।। 11
रात नदी के तट खड़ी,जुड़ा अपना खोल।
साबुन जैसा चाँद भी, गाया कसम से डोल।। 12
मछली वाले ताल का,बगुला चौकीदार।
ऐसे ही मरते रहे, सच के पहरेदार।। 13
अँधियारे ने रात भर, पाले जितने चोर।
हाथ पकड़कर ले गई, कोतवाल बन भोर।। 14
पलकें भीगी राह में, आया तेरा ख्याल।
महक रहा है जेब में, भीगा हुआ रुमाल।। 15

डॉ. मनोज कामदेव
गाजियाबाद (उत्तर प्रदेश)

तुम होते तो

तुम होते तो भरी अमावस
पूनम का पखवारा होता ।
तुम सरहद पर दिया जलाते
ड्योढ़ी पर उजियारा होता ।

चिट्ठी पत्री राह निहारे
चंदा तारे रात निहारे
मुट्ठी में जब आती
छत का कौना अतरा होता ।
तुम होते तो .....

सैंन्दुर टिकुली पायल बिछिया
पत्रों में सब कुछ मिल जाता
जब-जब नाम तुम्हारा पढ़ती
चूड़ी का खनकारा होता
तुम होते तो .....

आंगन में गोवर्धन रखकर
बहना भैया दूज मनाती ।
रोली अक्षत थाल सजा कर
पैसों का बंटवारा होता ।
तुम होते तो.....

हाथों में कजरौटा लेकर
मां की बांह बलइया लेती
आंचल में रख सारे तीरथ
मंदिर मस्जिद गुरुद्वारा होता ।
तुम होते तो .....

ललिता नारायणी
प्रयागराज

बाज़ार कहानी का...

लगा था बाज़ार कहानी का
खो गया किरदार कहानी का

कहानी में दम नही होगा शायद
तभी लगा इश्तिहार कहानी का

मुकाम पे पंहुचा के गुम हुआ
जो था मददगार कहानी का

उसको हममें दिलचस्पी थी बहुत
वही था एक तलबगार कहानी का

अंत जैसा है प्रारम्भ वैसा नही था
हर पात्र था गुलज़ार कहानी का

दूसरे ले उड़े लाइमलाइट उसके हक की
महरूम रह गया हक़दार कहानी का

दो प्रेमियों ने शादी करके गलती कर दी
रह गया अधूरा प्यार कहानी का...

किस्सा खत्म हुआ कहानी खत्म हुई
खत्म हुआ घर बार कहानी का...

पीड़ा, ख़ुशी सब भाव व्यक्त किये
पास था अपने हथियार कहानी का

ओमवीर करन
6/c रिसाली सेक्टर भिलाई
छत्तीसगढ़ पिन 490006

छठी मईया

प्रकृति के छठे अंश से प्रकट हुई, 16 देवियों में महान
बिल्ली जिनकी सवारी है, छठ है उनका उपनाम।
भारत का एक मात्र पर्व जो वैदिक काल से चला आ रहा,
जो है बिहार की संस्कृति,जिसका रहता है इंतजार,
वह महापर्व छठ पूजा है,हम बिहारियों की शान।
कार्तिकेय की पत्नी तुम, देवसेना तुम्हारा नाम
षष्ठी को है जन्म लिया, इसलिए छठी पड़ा तुम्हारा नाम।
कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष की चतुर्थी को मां अपने नईहर आती है,
जो इनकी श्रद्धा से पूजन करे सुख-समृद्धि उनके घर आती है।
36 घंटे निर्जला व्रत का संकल्प लिया जाता है,
पुरुष - स्त्री दोनों ही व्रत कर पाता है।
वस्त्र में धोती और साड़ी पहनना ही रिवाज़ है,
सदियों से चली आ रही बिहार की संस्कृति पर हमें नाज़ है।
पहला छठ अपने नईहर से ही उठाया जाता है,
चतुर्थी को नहाय-खाय, उस दिन चावल-दाल और लौकी का सेवन किया जाता है।
पंचमी को होता है खरना उस दिन रोटी और खीर है बनता,
ठेकुआ है महत्वपूर्ण प्रसाद, इसके बिना छठ अधूरा माना जाता है।
इसमें प्राकृतिक वस्तुओं का ही प्रयोग किया जाता है,
सूप, ढाका, डाला सब बांस से बनाया जाता है।
षष्ठी को फूल, फल,और ठेकुआ से ढ़लते सूर्य को अर्घ्य
इसी महान पर्व में दिया जाता है
घाट से आकर शाम को,रंगोली बनाकर गन्ने से कोशी भरा जाता है,
मनोहर-मनोहर गीत गाकर मां को प्रसन्न किया जाता है।
सप्तमी को जल में खड़े होकर सूर्य के प्रथम किरण का इंतजार किया जाता है,
दूध और जल से उगते सूर्य को अर्घ्य दिया जाता है।
अदरक और गर्म पानी से पारण किया जाता है,
चार दिन का यह महापर्व छठ कहलाता है।
जो अब विश्वभर में मनाया जाता है।।

नेहा चौरसिया
असम

पुराना घर

छोड़ आया हूँ अपना
पुराना घर,कुछ खट्टी मीठी
यादों का ताला लगा कर
हमेशा के लिए
जिसके फर्श से लेकर
दरवाजे खिडकियों की
हर चीजें चुनकर लगाई थी
एसी,इनवर्टर, गीजर
सभी यों ही लगा हुआ है

जाना होता है कभी कभी
हफ्ता दस दिन बाद या महीनों में
देखने के लिए,सफाई के लिए
छत पर बारिश का पानी सूखकर
हरी काई पपड़ी बन गई है
नागफनी गमलों में फैली है
पड़ोसी का उलाहना
मेरी झाड़ की बेल उनके
तारों पर चढ़ गई है

खोलता हूँ जाकर ताला तो
कभी बिखरा मिलता है
छूटा हुआ सामान,कुछ कबाड़
टूटी हुआ सिंक
चोरी हुई नल की टोटियां
इन सबकी पहरेदार
दीवार से चिपकी छिपकली
आँखें तरेर कर देखती है
शायद कहना चाहती है क्यों
मुझे यहाँ कैद कर रखा है
काकरोच तो सभी जगह
बेहोश पड़े हैं भूख के कारण
चूहों ने भी धमाचौकड़ी बंद कर
घर बदल लिया है शायद

गलियारे के बाथरूम में
पानी बह रहा है
यहीं कबूतरों ने अपना
आशियाना बना रखा है
दरवाजा खोलते ही
बदबू का एक भभका
आता है, जी मचला जाता है

साफ सफाई करने
किसी दिन फिर आना है
फिर चाभी इस घर की
किसी और को सौंप कर
वापस लौट जाना है
हमे
शा के लिए
अपने नये घर मे
बच्चों के घर में
पर भूलता नही नौकरी में
नौकरी के बाद वर्षों
थोड़ा थोड़ा करके बना आशियाना
नींव से लेकर छत तक
गर्मी सर्दी और बारिस में
बनवाया था,जुगाड़ कर
प्राविडेंट फंड और बैंक के कर्जे से
अधिवार्षिता के पश्चात सूकुन से
रहूँगा अपने इस घर में

भूलती नही वहाँ गुजारी गई
वे बीती हुई शामें
जब गुलाम अली, जगजीत सिंह की
गजलें सुनते सुनते
बच्चों को डांटते, दुलारते
रात में चला जाता था
बेहोशी के आलम मे
नींद के आगोश में
अगली सुबह दफ्तर
करना होता था
कुछ दुख वहाँ छोड़ आया
कुछ सुख यहाँ ले आया
वह समय जाता रहा
यह समय भी चला जायेगा।

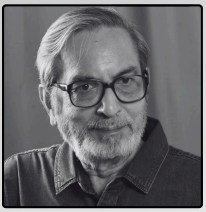

सुभाष चन्द्रा
लखनऊ (उत्तर प्रदेश)

भावनाएं

सब खेल रहे है।
कोई जज्बातों से
कोई हिसाबों से।

कोई तूफानों से।
कोई दूजे प्राणों से।
कोई कई बेघरों से
अनगिनत डरो से।

देखो सब खेल रहे है।
किसी की निर्बलता से।
कार्य करने की प्रबलता से।
तानाशाही व स्व बर्बरता से।

फिर क्या होगा जब ईस्वर
स्वयं उनसे खेल खेलेगा।
अभी इतराते है छीनकर
किन्तु ईस्वर सब ले लेगा।

तब पता लगेगा उनको
खोने पे कैसा लगता है।
मक्कार कितना भी हो
एक दिन वह भी ठगता है।

प्रकाश कुमार
मधुबनी, बिहार

दुनिया

क्या हुआ इस दुनिया में ,
ना जाने किस गली मे खो गई ,
ना तुम्हारा पता ना तेरी यादों का ,
एक सपना जो देखा था मैने कभी ,

कहां वो गुम हो गई ,
किसी की सांस अटक गई ,
किसी की आवाज चली गई ,
कोई दुनिया कब कोई छोड़ गया ,

तो कोई दुनिया भूल गया ,
ना जाने क्या होगा इस दुनिया का ,
कोई रास्ते भटक गया अपना कोई ,
तो किसी की नजरें भटक गई कहीं ,

कोई मुझे भूल गया ,
तो कोई तुझे भूल गया ,
कब किसी की चीख सुनाई देगी ,
या कब किसी का दर्द सुनायी देगा ,

ये कोई नही जानता है ,
कल क्या होगा, कब क्या होगा,
किसी की कब बारात निकलेगी ,
या किसी की कब मैयत निकलेगी ,

क्या विश्वास इस अजनबी ,
अनचाहा, अंधविश्वासी संसार का ,
आज बाते कर रहे है कल पेपरों मे पढ़ेंगे ,
कल मेरी लाशें गिनी जायेगी या याद किये जायेंगे ।

क्या है इस नश्वर पिजड़े का ,
कोई नही जानता !

रुपेश कुमार
चैनपुर, सीवान (बिहार)

धुआं

अपनी सीमाओं को फैलाने
अपनी शक्ति से डर दिखलाने
आज फिर वही सूर्य
सुर्ख-लाल और प्रचंड भेष में
भोर होने से पहले ही
आ निकला है
बस्तियों में,
कण-कण को
भयंकर संगीत में डुबोता
प्रलयंकारी ताण्डव करता
उदय हुआ है
भूत वर्तमान और भविष्य के
चिथड़ों में लिपटे
सुनहले सपनों को
सदा के लिए अस्त करने,
समस्त शक्तियों के रहते
जिजीविषा को पछाड़कर
मुमूर्षा तक
खौफ के साम्राज्य को विस्तारता
आ निकला हैं बस्तियों से होते हुएं
अब अलग आसमां में
जहां अब नीलिमा नहीं
केवल घोर अंधकार है,
जहां अब चिड़ियों का कलरव गान नहीं है
खाने को मुठ्ठी भर धान नहीं है
अब है केवल गिद्धों का साम्राज्य
और है बस धुआं-धुआं
रंगों में लिपटी काली धुंआ।

यशवंत रैगर
दिल्ली

लड़कियां

अक्सर....
बहुत बोलने वाली लड़कियां
होती हैं अंदर से चुप
इतनी चुप कि
पता नहीं चलने देतीं
किसी को भी
उनके भीतर के शोर को
और
ज़्यादा बोल तेज़ बोल
लगा कहकहे ज़ोर से
छिपाती हैं अपने आप को
अपने आप से ही
खड़ी कर देती हैं एक अदृश्य दीवार
अपने सामने
जिससे बनी रहती है दूरी उनसे
जो खड़े हों उनके सामने
कुछ पूछने पर किसी के
देती हैं ऐसे जवाब
जैसे उनके जैसा नहीं कोई बिंदास
पर असल में वो डूबी होती हैं
एक पानी रहित कुएं में
व्याकुल समुद्र देखने को उत्सुक
लेकिन कूपमण्डूक जीवन
नहीं निकलने देता पंख इच्छाओं के
आँखें नहीं देख पातीं सारा आकाश
पर चतुर होती हैं ये
बकबक करने वाली लड़कियाँ
दिखाना जानती हैं वो
जो है नहीं पास
मन की बेपंखों की काल्पनिक उड़ान
छिपा लेती हैं चौड़ी मुस्कान पीछे
उदासी का घाव
बचा लेती हैं ख़ुद को पढ़े जावे से
छोटी-छोटी बातों पर ठहाके लगाने वाली
नादान सी दिखने वाली
ये समझदार लड़कियां

मुनेश शर्मा
गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश

वतन

पूछ रही है धरती आज ये,
भारत के जन-गण-मन से।
कैसे उऋण होगे बोलो तुम,
बलिदानी-शहीदों के ऋण से?

जलियांवाला बाग का किस्सा,
कहो,क्या किसी ने भूली है?
जुल्मी,क्रूर अंग्रेजों की बर्बरता,
कहो, क्या घटना मामूली है?

कतरा-कतरा खून बहा था
गोरों ने खूब खेली होली थी।
अपने वतन की खातिर जन,
सीधे सीने में खाई गोली थी।।

याद करो कुर्बानियां वीरों की,
पन्ने इतिहास के पल्टो तुम।
कैसे मिली आजादी वतन को,
अपनी अंतरात्मा से पूछो तुम ?

संघर्ष चला था कई वर्षों तक
कई लाल बलिदान हुए यहां
जहां खड़े हो आज तुम निश्चिन्त,
बलिदानियों का बहा खून वहां।।

मत सोचो तुम, है देश तुम्हारा,
तुम ही इसके अधिकारी हो।
षड्यंत्र रच रहा है दुश्मन आज,
कहीं,कह दे न कि तुम बाहरी हो।।

जागो!जागो!हे हिंद के वासियों!
अपनी अस्मिता बचा लो तुम।
फिर न हो जाए देश गुलाम कहीं,
अपना वतन बचा लो तुम।।

- पी.यादव 'ओज'*
झारसुगुड़ा। (ओडिशा)

गीत

न शब्द गीत बन सके,, न प्रीत ही में ढल सके
न नींद आंख में बसी, न स्वप्न खास पल सके
मैं कल जो एक शून्य थी, मैं आज भी तो शून्य हूं
कदम जो कल रुके, हैं अब तलक रुके, न चल सके।
न शब्द गीत बन सके ----

जो घाव थे हरे- रहे हरे- न दर्द ही हुआ ये कम
बह रहे नयन से अश्क न जाने कौन सा है गम
न जाने किसके नाम की मेंहदी रची है हाथ पर
अटक रही है श्वास भी,न हिचकिया रही है थम
न कोई दिख रहा सखा जो मुझसा मुझ में ढल सके।
न शब्द गीत बन सके---

न कैद कर सकी मैं तितलियां ,न जुगनू ही पकड़ सकी
ये फूल भी हुए ख़फ़ा ,न भ्रमर की समझ सकी
ये कौन जो ठहर गया मुकुर में इस तरह अभी
ये चूड़ियां तो शांत थी, पायल भी न खनक सकी
गिरी तो बूंदें सीपि में न मोतियों सा ढल सके।
न शब्द गीत बन सके---

न कह सकी,न रह सकी ,न बन के धार बह सकी
मैं नींव में धंसी रही, न पत्थरों सी ढह सकी
है कौन जो तराशता , कौन थामता इस हाथ को
ऐसी हवा चली के खोल खिड़कियां ,न कह सकी,
न मर सकी है भाग्य यह ,न दुख मेरे पिघल सके।
न शब्द गीत बन सके ---

वंदना मोदी गोयल

आशा की किरण

बुन लो सपने सात रंग के,
कुछ रंग तो होगे साकार।
बेशक सब पूरे ना होंगे,
एक हुए तो होंगे हजार!

जीवन ना फूलों की शैय्या,
भँवर में डोले कर्म की नैय्या।
जो डूबा, वो पार उठेगा,
चाहे रब ही बने खेवइया...
श्रम - सीकर से तन को सज के
कर लो ये अभिनव श्रृंगार !....

किसने पायी सहज सफलता,
उत्तम लक्ष्य को पावे में
कर्मव्रती काँटों के पथ पर,
बढ़ते रहे जमाने में...
कंटक पथ पर लहुलुहान हो,
मिलता है अपरिमित सार।....

साथ नहीं देता कोई भी,
खुद पर खुद रखना विश्वास।
सायों पर भी ना भरोसा,
तोड़ेंगे वे वक्त पै आस!
एक आस्था रब पर रखना,
है उन हाथों में पतवार...!

हर पल होती रहे परीक्षा,
खुद से खुद की करो समीक्षा
बढ़ते जाओ पथ पर अपने,
वक्त से तुम ले लेना शिक्षा!
सच्चाई, सद्कर्म प्रार्थना,
कर देगा सपने साकार...!

कौन है अपना, कौन पराया?
समझ नहीं अबतक यह आया।
विश्वप्रेम की डोर में बंधकर,
हर घायल दिल को सहलाया,
जो जैसे हैं करते वैसा,
अपना तो है, सबसे प्यार...!

डॉ. अन्नपूर्णा श्रीवास्तव
पटना, बिहार

प्रतिकार

हर बार...
तुम्हारा व्यंग्यपूर्ण हास्य,
मुझे पीड़ा तो देता ही है,
टूट कर बिखर भी जाती हूँ,
और बार-बार खुद को
समेट कर फिर से,
खड़ी भी होती हूँ ।
क्योंकि कर लेती हूँ....
अपेक्षा उन सभी बातों की
जो हुआ करते,हर रिश्तो में....
ये घमंड का जामा पहना कर
जब तुम मेरे होने को
खागलते हो ना,
तो सोच कर हंसती हूँ।
क्योंकि एक बार टूट कर
बिखर गया था मेरा सब कुछ,
जो थे मेरे अस्तित्व का हिस्सा
बन गई थी राख उस पल,
मेरे संपूर्ण अस्तित्व की
न होने के लिए।
तब....
उस पल संवारा था
खुद को ही कहीं
हुआ था पुनः निर्माण,
उन संस्कारों ,
उन बातों के साथ,
जो मिले थे मुझे
कहीं गर्भ से।
अगर फिर भी तुम
मेरे अस्तित्व को
आरोपित करते हो !
तो हाँ है .....
मुझे अभिमान,
मेरे परिवार,वो संस्कार
उन बातो ,उन आदर्शों का
उस समर्पण का जिससे मिलता है
सुख मै,मुझे मेरी आत्मा को
और बन जाती है शक्ति मेरी
क्योंकि कभी नहीं होना मुझे
तुम्हारी धारणा का शिकार
करती हूँ आज इसका प्रतिकार !

सपना अग्रवाल

दहलीज़

दहलीज़
लड़कियों के जीवन में
एक पड़ाव है, क्योंकि
उन्हें पता नहीं
आज यहां, कल कहां होंगी!
एक दहलीज़
मायके का होता है
जहां वो हंसती-खिलखिलाती
सारी जिम्मेदारियों से मुक्त
आजाद पक्षी होती हैं, पर
यह पल कुछ समय के लिए
होता है!
दूसरा दहलीज़
ससुराल का होता है
जहां सारा जीवन व्यतीत करना
होता है
अगर उस दहलीज़ के अंदर
रहने वाले सभी प्राणी
मुहब्बत व इज्ज़त करने वाले
और
बा-एहसास होते हैं, तो
यह दहलीज़ स्वर्ग से भी
सुंदर हो जाता है
नहीं तो, आजीवन कारावास!
आज के दौर में
कब प्रस्थान बिंदु बन जाए
कहा नहीं जा सकता!

डॉ. शबनम आलम
अलीगढ़, उत्तर प्रदेश!

शतरंज

बिछ गयी है शतरंज की बिसात
सज गये हैं.. तन गये हैं
प्यादा, हाथी, घोड़े, ऊँट और वजीर
करने को आपस में दो दो हाथ
फिर शुरू हो गया है खेल
करने को शह और मात
तरह तरह की चालें, घात प्रतिघात
मनुष्यों की तरह..!

अपने अपने रंग रूप पर इतराती
श्वेत श्याम गोटियाँ
करने को लालायित
एक दूसरे की बोटियाँ
एक ही धातु की सभी गोटियाँ
पर अलग अलग किरदार
किसी को प्यादा
तो किसी को ऊँट हाथी
या वजीर होने का अहंकार
मनुष्यों की तरह..!

लो ये सफेद प्यादा मरा
उधर वो काला घोड़ा मरा
एक एक करके
उठती जा रही हैं गोटियाँ
कोई जरा जल्दी
तो कोई जरा देर से
और समाती जा रही हैं
फिर से डिब्बे में
जहाँ नहीं कोई भेद
काली और सफेद में
प्यादी और वजीर में
सब हो गयी उत्तेजनाहीन
मानो खत्म ही हो गया अस्तित्व
मनुष्यों की तरह..!

रह गयी बिसात वहीं अनुत्तेजित
मानो प्रतीक्षारत
इसे कहाँ पड़ता है कोई फर्क
चाहे प्यादा मरे या वजीर
ये जानती है
कि ऐसे ही चलता रहेगा ये खेल
और नयी नयी चालें चलने को
फिर आयेंगे प्यादे और वजीर
वापस लौट जाने के लिए
मनुष्यों की तरह..!!

यही खेल की शतरंज है
यही जीवन की शतरंज है..!!

प्रमोद मूंधड़ा
जयपुर, राजस्थान

फुसफुसाहट

शांति में जहाँ छायाएँ नाचती हैं,
एक रोशनी उभरती है, एक क्षणभंगुर झलक।

रात के दिल में, एक खामोश पुकार,
सत्य की गूँज, जो सबमें बुनी हुई है।

तारों के नीचे, जहाँ ब्रह्मांड आहें भरता है,
आसमान जितनी पुरानी आत्मा को जगाता है।

हर साँस एक प्रार्थना है, हर धड़कन एक गीत है,
समय के ताने-बाने में, जहाँ हम सब हैं।

पहाड़ अनकही बुद्धि के साथ उठते हैं,
समय की नदियाँ, निर्भीक धाराओं में।

प्रकृति का आलिंगन, एक सौम्य मार्गदर्शक,
हर फुसफुसाहट में, ब्रह्मांड छिपा है।

खामोशी में नहीं, बल्कि ध्वनि के भीतर खोजें,
हँसी और आँसुओं में, पवित्रता पाई जाती है।

अस्तित्व की धड़कन, एक दिव्य लय,
हर पल में, पवित्रता संरेखित होती है।

राख से हम उठते हैं, विद्या के ज्ञान की तरह,
निराशा की गहराइयों में, हम मूल को खोजते हैं।
छाया को गले लगाओ, प्रकाश प्रकट होगा,
स्वयं की यात्रा में, अपनी आत्मा को साहसी होने दो।

हृदय के धागों से बुनी गई चित्रण,
सृजन का एक नृत्य, जहाँ हम सभी एक भूमिका निभाते हैं।
अनंत पथ, फिर भी गंतव्य स्पष्ट है,
अस्तित्व की शांति में, सत्य प्रकट होगा।
इसलिए घाटियों में भटको, आसमान में ऊंची उड़ान भरो,
पवित्र की खोज में, अपनी आत्मा को ऊपर उठने दो।
प्रेम को अपनी हद और शांति को अपना मार्गदर्शक बनाओ,
सभी की एकता में, अपनी आत्मा को अपना गौरव बनाओ।

वर्षा गुप्ता 'संप्रभा'
बाँदा, उत्तर प्रदेश

एक विश्वास

दूर कहीं...
क्षितिज के उस पार से
अदृश्य खिलती सी..कुछ मनभावनी तरंगें..
जिस दिन सहेज कर समेट ले आएंगी मेरे लिए
और दे जाएंगी मुझे लुभावने कुछ एहसास से
हौले - हौले बदलाव कुछ आ रहे हैं सुखद से..।

गुज़रते वक़्त के..लम्हों में छुपी हुई थी
कहीं... "एक आस"...
न सोचा था...कि..कभी किसी दिन,
आहट सी होगी..मेरे अरमानों के द्वारे !
उम्मीदों की...थपथपाती सी दस्तकें होंगी,
और जाग उठूँगी मैं.. खिलती हुई एक मंजरी सी..
खुल जाएंगे मेरे लिए कुछ संभावनाओं के द्वार से..।

जिस दिन से...
जीवन रूपी दीपक में..
जो ढेर सपनों व आशाओं से लबालब था!
अब उसमें उमंगों के, रंगीन जगते हुए से..
हसीन अभिलाषाओं के दीये जगमगाने लगे हैं।

जिस दिन से...
खिल उठे अंकुर प्रेम के मेरे अंतर्मन में
चहुँओर बिखरी रोशनी में मुझे अब..
एक ठहराव सा नज़र आने लगा है..!
सहेजे हुए मेरे...चुनिंदा कुछ सपनों को..
एक ख़ुशनुमा पसंदीदा आकार मिलने लगा है..।

महसूस होती है मुझे..
हाँ..! महसूस होती है मुझे,
उस दिन से चेहरे पर मेरे..
एक मोहक सी...मुस्कुराहट खिलने लगी है !
धीमे-धीमे ज़िन्दगी के मायने भी
अब.. बदलने से लगे हैं..।

जिस दिन से...
पहना मैंने अपने अरमानों का परिधान..
नाउम्मीद थे कभी जो ख़्वाब मेरे..
वे अब कुछ..खिलने से लगे हैं...।

सुमन दीक्षित
कोलकाता

जयद्रथ वध

हे पार्थ धनुर्धर तुम हो ऐसे ,
अश्रु बहाना उचित नहीं ,
वीरगती को वीर ने पाया ,
शोक मनाना उचित नहीं ,
अपने धीरज को बांधों अब ,
इसकी बहुत जरुरत है ,
एक असुर का वध करने का ,
अच्छा उचित मुहूरत है ,
रणभूमि में वीर न कोई ,
अश्रु कभी बहाता है ,
शत्रु का कर दमन युद्ध में ,
धर्म ध्वजा लहराता है ,
तुम भी देर मत करो बिलखकर ,
समर अभी विशेष बचा है ,
पुत्र तो स्वर्ग सिधार गया पर ,
कारण अब भी शेष बचा है ,
चलो उठाओ गांडीव अपना ,
अग्नि समाधी पर मत जाओ ,
अभिमन्यु के हत्यारे को ,
रणभूमि में मार गिराओ ,
ऊपर देखो आसमान में ,
सूर्य देव भी चमक रहे हैं ,
शायद जयद्रथ वध के खातिर ,
नभ में अब भी दमक रहे हैं ,
हांथ में आए शत्रु को यूं ,
जीवित बचाना उचित नहीं ,
यह अवसर है अर्जुन इसको ,
व्यर्थ गंवाना उचित नहीं ।

ऋषि तिवारी
चकरीधाम (दरौली)
सीवान, बिहार

प्रभु निवास

कौन है अपना कौन पराया
क्या है सच और क्या है माया
धरा पे क्यों कर पल्लवित जीवन
दुख सुख का क्यों जाल बिछाया

क्यो कर मौसम आते जाते
हर बहार नये पत्ते आते
बारिश में धुल जाती कुदरत
हरयाली में मन मदमाते

कर्णधार क्या मन मे तेरे
काहे को संसार रचाये
क्या मानव से ये ही चाहे
मंदिर में तेरे गुण गाये

तू भी क्या हम जैसा ही है
चाहता है सब तुझ को माने
रैन दिवस गुण गायें तेरे
तुझ को सर्वव्यापक जाने

बोलो बोलो कह दो भगवन्
मन्दिर में न रहते हो तुम
प्रेम बिखेरे इत उत जो नर
उस के मन में बसते हो तुम

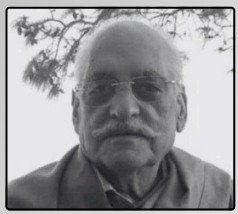

पी. एल. गुप्ता
गुरुग्राम, हरियाणा

वो लड़कियां

वो लड़कियाँ जो खुल के हंसती है
कहीं भी कभी भी
जो हौसलों के पंख लगा उड़ जाना
चाहती है
उस खुले आकाश में
जहाँ आजाद है उनके ख़याल
उनके पंख
और उनके सपने
पर रुक जाती है, ठहर जाती है
कुछ बुदबुदाने की आवाज से
कि सुनो तुम लड़की हो
हँसना जरा सम्भल के
रोना भी तो सिसक के
खुले स्वर की तुम्हें आज़ादी नहीं
तुम आधी हो पूरी आबादी नहीं....

पर अपनी हंसी से दबा दी,उसने आज वो
आवाज
एक नये समय का तुम कर रही हो
आगाज
सुनो कान बंद
नजर सामने
और स्वर ऊँचा रखना
एक पग में नाप लो धरती
कदम ऐसे रखना।

अंजली सिंह
चंदौली, उत्तर प्रदेश

चोरी अल्फ़ाज़ के

तुम चोर हो!
तुमने चुराई हैं किसी के
बस्ते से उसकी कविताएं
तुमने चुराए हैं किसी के ख़्याल,
अहसास, किसी के लफ़्ज़....!

और उन्हें बेचा है,
अपनी जुबां से,
दुकाँ से, अपने मकाँ से..
और भरी हैं
सोहरत, नाम और
वाह- वाही की अपनी पेटियाँ..!

एक कवि की कल्पना ख़त्म हो
उससे पहले करनी होगी
चुराई हुई सारी कविताएँ बापस,
और बनना होगा इंसान,
ताकि ये दुनियां बची रहे....!

माही कुमार
ग्वालियर, मध्य प्रदेश

सपने

उड़ना चाहती हूँ
अपनों से नाता तोड़ आई हूँ
यादों की परछाई भी छोड़ आई हूँ
उड़ना चाहती हूं नील गगन में
इसीलिए सारे बंधन तोड़ आई हूँ।
रस्मो रिवाज सारी हुई पुरानी
मुरझाए रिश्तों की ना कोई कहानी
अब एक नया मुकाम पाने के लिए
पुरानी पहचान पीछे छोड़ आई हूँ
इसीलिए सारे बंधन तोड़ आई हूँ।
सारी धरती अंबर है मेरा
उड़ते बादलों पर होगा बसेरा
चढ़ इंद्रधनुष के रथ पर
तंग पुराना घरौंदा छोड़ आई हूं
इसीलिए सारे बंधन तोड़ आई हूँ।
नए सफर में नए रास्ते नई दिशाएं हैं
अब तो मेरे होंठ भी खुशी से फड़फड़ाए हैं
सपनीली आंखों में सपने भरकर
नींद मैं पीछे छोड़ आई हूं
इसीलिए सारे बंधन तोड़ आई हूँ।
चली जो मंद मंद पुरवाई
उसमें बह गई सारी तन्हाई
नए गीत होंठों पर सजाकर
सारे गिले शिकवे छोड़ आई हूं
इसीलिए सारे बंधन तोड़ आई हूँ।

अर्चना सिंह
महाराजगंज, उत्तर प्रदेश

बापू के नाम

रब का हुक्म सँभाल मुसाफ़िर
बाकी सब जंजाल मुसाफ़िर

देख तू इसमें फँस मत जाना
दुनिया माया जाल मुसाफ़िर

तू जिस पर अब तक बैठा है
काट नहीं वो डाल मुसाफ़िर

तन्हा हो कर पछतायेगा
चल दुनिया की चाल मुसाफ़िर

इक दिन सुख भी आ जाएगा
दिल में दुख मत पाल मुसाफ़िर

वार तुम्हारा सह जाएगी
मेरे दिल की ढाल मुसाफ़िर

पीर फ़क़ीरों ने बोला है
अच्छा है यह साल मुसाफ़िर

मंजिल को ग़र पाना है तो
मिहनत को मत टाल मुसाफ़िर

तुझ बिन जीवन के सरगम का
बिगड़ा है सुर ताल मुसाफ़िर

हीरे मोती का क्या करना
खा बस चावल दाल मुसाफ़िर

तू फ़िक्र न कर मुस्तक़बिल का
जी ले अपना हाल मुसाफ़िर

नेकी चाहे जितनी कर ले
पर दरिया में डाल मुसाफ़िर

कहती 'शिखा' मत कह दुनिया से
अपने दिल का हाल मुसाफ़िर

डॉ. पल्लवी शिखा
दिल्ली

कर्म

यूं ही नहीं किसी को,दुनिया में पूजा जाता।
महादेव बनने को,हलाहल को पिया जाता।।
चाहत है यदि तेरी, मिले तुमको भी सम्मान।
हे नर सुनो तुमको,करना होगा कर्म महान।।

औरों के आसरे जो, बैठे रह जाते हैं।
पाते नहीं मंजिल को, भीड़ में खो जाते हैं।।
चाहते हो यदि तुम भी,कुछ कर दर्शाने को।
तो दौड़ो जी जान से, खुद को अजमाने को।।

होते हैं जो कायर, वो किस्मत को रोते हैं।
मानव जन्म पा कर भी, उसे यूँ ही खोते हैं।।
करना है यदि तुमको,जिंदगी को सफल अपना।
तज करके आलस को,पड़ेगा अग्नि में तपना।।

लहरों से घबराकर, जो पीछे हट जाते हैं।
जरा पूछो उनसे तुम, क्या मोती पाते हैं।
पाना है यदि तुमको,दुनिया में ऊँचा स्थान।
ऐ नर सुनो फिर से,करना होगा कर्म महान।।

कुमकुम कुमारी 'काव्याकृति'
मुंगेर, बिहार

नारी

वो माता है, वो भगिनी है,
वो पुत्री है, वो पत्नी है,
हर रूप में जो न्यारी है,
हां वो नारी है।

प्रेम, दया, करुणा, ममता,
वात्सल्य और स्नेह सुधा,
भावना जिसकी बलिहारी है,
हां वो नारी है।

वो हीं शक्ति, वो हीं दुर्गा,
काली, लक्ष्मी वो शारदा,
वो दुष्ट दमनकारी है,
हां वो नारी है।

प्रकृति से जो त्यागी है,
बदले कुछ भी ना मांगी है,
वो मानवता की प्रतिहारी है,
हां वो नारी है।

अपने हर क्षण का दान दिया,
जीवन प्रतिपल आसान किया,
वो वंदन की अधिकारी है,
हां वो नारी है।

नारी बिन जीवन सोचना,
कर पाओगे ये कल्पना ?
बिन जिसके दुनिया अंधियारी है,
हां वो नारी है।

स्वयं शिव भी शव हो जाते,
शक्ति को जब पास ना पाते,
सृष्टि जिसकी आभारी है,
हां वो नारी है।

चक्रपाणि मिश्रा
हजारीबाग, झारखंड

मेरे देश की मिट्टी

मेरे देश की मिट्टी की, बात ही निराली है।
अनेकता में एकता ही, अपनी पहचान बनाई है।
विविध रंगों के परिधान से, सुसज्जित धरा आज मुस्काई है।
चहुँदिसि यत्र-तत्र-सर्वत्र, हरियाली ही छाई है।
मेरे देश की मिट्टी ---

इसी धरा पर जन्में, अनेक महापुरुष तमाम।
मानस पटल पर अंकित हैं, गांधी, गौतम और कलाम।
इनके आदर्शों को कभी, न भूलेगा हिंदुस्तान ये नाम।
विविधताओं से सराबोर हुई, पर एक ही तेरा नाम।
मेरे देश की मिट्टी---

इसी देश की मिट्टी में खेले, सुभाष और चंद्रशेखर आजाद,
भारत माँ के वीर सपूतों ने, हँसते-हँसते दे दी अपनी जान,
मातृभूमि के ऋण से मुक्त, कभी न होगा अपना ये जहान,
प्राणों से भी प्यारा है, ये मेरा हिंदुस्तान, ये मेरा हिंदुस्तान,
मेरे देश की मिट्टी---

मेरे प्यारे साथियों!
इस देश की रक्षा के खातिर, अब हमें ही लड़ना होगा,
देश के प्रति कर्तव्यों को, भलीभाँति निभाना होगा,
अगर जरूरत पड़ी तो,
शमशीर भी उठाना ही होगा,
तिरंगे की हिफाजत को, साथियों अब आपको ही करना होगा।
मेरे देश की मिट्टी---

डॉ. मधु मिश्रा
उत्तर प्रदेश

आस्तीन का सांप

दिन किंकर्तव्यविमूढ़ हुए हैं,
निंदिया का अन-बन रातों से।
सपने भी रूठे लगते हैं,
सहमे हैं वज्राघातों से।।
दूध पिला कर जिसको पाला,
वही नाग डँसने वाला है।
घर में आग लगाने वाला,
घर का ही वह रखवाला है।।
विश्वासों का अंकुर सूखा,
व्यवहारों के हिम-पातों से।।सहमें हैं.....
चन्दन समझ चढ़ाया जिसको सिर,
वह तो थी बस राहों की धूल।
कांटों का छल था वह कोरा,
जिसे समझ बैठा था फूल।।
बीच राह में उलट भिंगोते,
डर लगता ऐसे छातों से।।सहमें है. .. ।
सावधान!विष-बेलि
तुम्हारा अंत निकट है,
सुखद दृश्य वाले नाटक
का अगला अंक विकट है। ।
करना कब खिलवाड़ भला है,
कोमल-कोमल जज्बातों से।।सहमे हैं.....
फिर कोई सुकरात महात्मा,
बुध गौतम भी आएगा।
फिर से कोई युद्ध -भूमि में,
कर्म-योग सिखलाएगा।।
लातों के जो भूत,भला वे,
कब मानेंगे बातों से।।सहमें हैं.....

मदनमोहन पाण्डेय
कुशीनगर,उ.प्र.

दोस्ती

जिंदगी से दोस्ती कर लीजिए
जिंदगी से दोस्ती कर लीजिए,
दुश्मनी को एक तरफ धर दीजिए ।
जिंदगी क्या है समझ आ जाएगा,
संगमिल इसके तो सफर कीजिए।।

जिस तरह भी हो सके निभाइए,
इससे मुंह मोड़कर मत जाइए ।
जिंदगी से दोस्ती कर लीजिए,
साथ इसके आप आनंद पाइए।।

यह सदा ही मित्र तेरी है तेरी,
साथ इसका दो सलाह है मेरी।
जिंदगी से दोस्ती कर लीजिए ,
दोस्ती करने में मत करना देरी।।

देख लेना गीत यह हो जाएगी,
और पल-पल आपको लुभाएगी।
जिंदगी से दोस्ती कर लीजिए,
आपकी हर श्वांस गुनगुनाएगी ।।

जिंदगी को प्यार से भर लीजिए
और खुद पर भी तो नजर कीजिए।
मरते दम तक साथ यह छोड़े नहीं,
जिंदगी से दोस्ती कर लीजिए।।

डॉ. अनिल शर्मा
बिजनौर, उत्तर प्रदेश

सम्मान की लड़ाई

वह भीष्म पितामह की जननी, वह देव-धरणी हस्तिनापुर|
वह चन्द्रवंश की परम्परा, आगत के स्वागत को आतुर||
वह विदुर-नीति की रस-सरिता, ऋषियों का पावन-कानन था|
वह सत्य, धर्म का युग द्वापर, साकार ईश का वंदन था||

क्यों भरत कीर्त्ति का प्रखर सूर्य, कुरु राजवंश में अस्त हुआ|
मूल्यों का पतन हुआ भारी, प्राचीर न्याय का ध्वस्त हुआ||
क्यों अंध-मोह के लालच में, मानव ने दानव रूप धरा|
वह हठी पूत, खल दुर्योधन , अनहोनी से भी नहीं डरा||

धृतराष्ट्र-सभा में दुष्टों ने, छल-चौसर विशद बिछायी थी|
जड़-मति विनाश का रूप धरे, दुर-दाँव खेलने आयी थी||
वह महा-समर की पृष्ठभूमि, वह क्रूर-काल का नर्तन था|
वह मोह-जाल था ईर्ष्या का, रिश्तों का नव-संबोधन था||

वह नेह-निमंत्रण नहीं सखी, लिप्सा का खेल घिनौना था|
पांडव भी समझ नहीं पाए, काँटों का तीक्ष्ण बिछौना था||
वह कपट-चाल पापी मन की, कोई भी ताड़ न पाया था|
वह इन्द्रप्रस्थ का सुख-वैभव , दुर्योधन को कब भाया था||

क्यों धर्म विवश लाचार हुआ, नारी का गौरव तार हुआ|
क्यों भरी सभा में इस भाँति, अबला पर अत्याचार हुआ||
कुल रीति-नीति का नाश हुआ, पुरखों का भी परिहास हुआ|
होती है द्वेष-अनल भीषण, उस सभा में ये आभास हुआ||

उस द्यूत-भवन में क्यों आखिर, सब मौन साधकर बैठ गए|
कुछ उठे विरोध के स्वर लेकिन, अपमान के भय से ऐंठ गए||
क्यों दुर्जन से सज्जन हारे, यह समझ नहीं पाया कोई|
अन्याय के सम्मुख विवश खड़ी, मानवता फफक-फफक रोई||

वह चीर-हरण कब तेरा था, वह घड़ी नाश की आयी थी|
अपनों के हाथों निज-कुल की मर्यादा स्वयं लजायी थी||
वह घाव नहीं तेरा कृष्णा, रिश्तों पर चली कटारी थी|
लज्जित थे कुल-अग्रज ज्ञानी, लज्जित 'पुर' की हर नारी थी||

हे! द्रुपद-सुता तू खेद न कर, अपमान नहीं वह तेरा था|
जो लील रहा था कुल-आभा, अभिमान का घोर अँधेरा था||
कल्याणी तू कुल की लज्जा, तू वामा नहीं परायी थी|
तू मान, प्रतिष्ठा की आशा, लेकर, निज घर में आयी थी|||

नारी वस्तु, समझी जाती, बंट जाती, दाँव पे लग जाती|
विधना कैसा ये न्याय तेरा, जीते जी नारी मर जाती||
वह राजवंश की पटरानी, दासी कहलायी गयी वहाँ|
पति की करनी की सजा भला, क्यों उसे सुनायी गयी वहाँ||

क्यों त्याग,, समर्पण की मूरत, हर युग में छली गयी नर से|
क्यों अपमानित होकर रोती, द्रौपदी की भाँति निज घर से||
मति सुन्न पड़ी अकुलाती है, अन्याय भूल नहीं पाती है|
नारी-रक्षा का यक्ष-प्रश्न, हर युग में कलम उठाती है||

डॉ. साधना जोशी 'प्रधान'
जयपुर, राजस्थान

नमस्ते! मैं पेड़ हूं

बहुत कर ली तुम सब ने राजनीति
अब ,कृपया ध्यान दे इधर साहब ,
प्रकृति के विषय को लेकर
क्यों हो इतने लाचार ?
बिना पैसों के देने में परिसेवा
क्या कोई होती काया तैयार ?
पर मैं सदियों से दे रही मुफ़्त
धरती पर श्वास लेने का अधिकार ,
नमस्कार ! मैं पेड़ बोल रही,
मुझसे बड़ा न कोई सरकार |

जी हाँ ! मैं हूँ इकलौती सबकी आधार,
फैलाओ इस पद्य के जरिए समाचार ,
जहां सभी को रखती फल- फूल, सब्जियों से स्वस्थ
वहीं देती इसे बेचने की रोजगार ,
परन्तु सोचों हरियाली न रही
तो किसी की क्या रहेगी औकात?
पंचभूत विहीन ,मरुभूमि रूप लिए
चारों ओर मचेगी हाहाकार ,
नमस्कार ! मैं पेड़ बोल रही ,
मुझसे करना ना इकरार |

अगर काट -काट कर धनी बनने का
स्वप्न देख रहे हो हर- बार ,
तो अवश्य उस समय भी अडिग रहना
जब मैं मारूंगी हुंकार ,
तब लालच की पट्टी बांध देखना
खुलते धरा पर नर्क का द्वार ,
फिर एक -एक को धर दबोचुंगी
आपदा- विपदा के साथ ,
नमस्कार ! मैं पेड़ बोल रही,
मुझसे करना ना टकरार |

अब भी कुछ नहीं बिगड़ा
त्यागो ऊंच -नीच का अहंकार ,
पेड़ लगाकर, पर्यावरण बचाकर
करो अपना उद्धार ,
विज्ञान के वरदान को करो
कुछ समय के लिए दरकिनार ,
मन -मस्तिष्क में बिठाए इस सुविचार को
तन -मन -धन से करो स्वीकार ,
नमस्कार ! मैं पेड़ बोल रही
हूँ तुम्हारे जीवन की सुंदर उपहार |

अविनाश कुमार साह
पश्चिम बंगाल

सुखद एहसास

पिता हमारी आकांक्षाओं का,
अनंत आकाश है।
जहां उड़ती सारी पतंगे ,
अपने पास है।
पिता एक सुखद एहसास है।
वो हमें हर संकट से बचा लेगा,
पूरा विश्वास है।
पिता है तो हमारे पास,
छत है मकान है।
पिता गमों को पीता है
मोम सा होकर भी,
पत्थर सा दिखता है।
उसकी तल्खियों मे भी सीख है,
वह जीवन के संघर्षों से,
लड़ना सिखाता है।
जिनके पास पिता है,
वो सबसे अमीर इन्सान है।
वरना दुनिया का हर सुख,
उसके लिए बेईमान है।
पिता संघर्षों की अमिट
दास्तान है।
खुद धूप सहकर भी बच्चों को
देता छांव है।
पिता अनुशासन है,
उसका हृदय विशाल है।
जीवन सरल हो बच्चे का,
इसलिए अपने प्यार को बनाता
कठोरता की ढाल है।
मुट्ठी में भींच फरमाईशों की लिस्ट,
खोजता है वो वही दुकान,
जहाँ पर सब कुछ मिल जाए,
और सस्ता भी हो हर सामान।।
पाई-पाई जुटाते कि बेटी का,
ब्याह हो ढंग से,
टूट जाता है पिता जब ,
लड़के वाले रहे दहेज पर अड़े।
मीलों पैदल भी चले ,
कि बेटी की मुस्कान कम पड़े।
एक पिता ही होता है जो,
बच्चों पर हो जाता कुर्बान।
सारी उम्र जुटाता रहता,
उनके सुख का सामान।

संगीता श्रीवास्तव
शिवपुर, वाराणसी

वो दुनिया

जहाँ पे हो कालीन धोखे की फैली,
जहाँ साफ चेहरे हों पर सोच मैली,
जहाँ ताज झूठों के सर पे सजे हों,
जहाँ बस गुनाहों के डंके बजे हों,
वो दुनियाँ अगर मिल भी जाये तो क्या है...
जहाँ पर हों चेहरों से ज्यादा मुखौटे,
जहाँ शान ऊँची हो इंसान छोटे,
जहाँ पे न ममता न करुणा दया हो,
जहाँ पे बची ना शरम ना हया हो,
वो दुनियाँ अगर मिल भी जाये तो क्या है...
जहाँ पे हो लालच, जहाँ वासना हो,
जहाँ पर वफ़ा की कोई आस ना हो,
जहाँ दोगलों का ही हो बोलबाला,
जहाँ छीनें भूखे के मुँह से निवाला,
वो दुनियाँ अगर मिल भी जाये तो क्या है...
जहाँ पीठ पीछे छुरा घोंपते हों,
जहाँ धूल नज़रों में सब झोंकते हों,
जहाँ सारे रिश्तों से ऊपर हो दौलत
जहाँ पर ज़ुबां से न मिलती हो नीयत,
वो दुनियाँ अगर मिल भी जाए तो क्या है...
के सच हो जहाँ पर कोई झूठ ना हो,
रिश्तों की डोरी में भी टूट ना हो,
न चेहरे पे चेहरा चढ़ा कोई आए,
न नफरत को दिल मे बढ़ा कोई आए,
वो दुनियाँ कहाँ है, कहाँ है, कहाँ है?

जहाँ प्रेम में ना हो कोई मिलावट,
दिक्खे ना नीयत में कोई दिखावट,
के मन और वाणी जहाँ एक ही हो,
जहाँ पर दिलों में ना परतें चढ़ी हो,
वो दुनियाँ कहाँ है, कहाँ है, कहाँ है?

ग़लती का एहसास हो और क्षमा हो,
गिरे ना कोई, हाथ कुछ यूं थमा हो,
जहाँ सर उठाने का अधिकार सबको,
मिले अपने हिस्से का संसार सबको,
वो दुनियाँ कहाँ है, कहाँ है, कहाँ है?
वो दुनियाँ कहाँ है?

मुकेश जोशी भारद्वाज
पिथौरागढ़, उत्तराखंड

खफा चांद

चांद कुछ-कुछ खफा है, अपने प्रभु राम से
बोला, हमें क्यों नहीं न्योता दिया
अपने विजयोत्सव के हर्षोल्लास में।।

क्या भूल हुई प्रभु हमसे
जो ऐसा व्यवहार किया
आपने सबका सम्मान किया
पर मुझे नहीं कहीं मान दिया।।

मैं हमेशा रहा सीता मैया
का विरह का साथी
रात भर उनसे वार्तालाप करके
उनकी दुख की घड़ी है काटी।।

अपनी शीतलता से उनके
संताप को हमेशा सहलाया
अपनी चंद्र आभा से उनके
मुख को है मनोहारी बनाया।।

जब लखन भाई मूर्छित हुए
हनुमान संजीवनी लाए थे
तब मैंने हीं अपनी चांदनी से
उनके मार्ग को लौकिक करके
उनकी यात्रा को सुगम बनाया।।

अगर हम भी आपके
विजयोत्सव में आते
अपनी चांदनी की छटा से
हर दृश्य की आभा निखारते
क्यूं आपने मेरा अपमान किया
मुझे अपने विजयोत्सव से
यूं दरकिनार किया।।

बोले प्रभु राम, चंद्रमा से
क्यूं व्यर्थ में घबराते हो ?
क्यूं रूठे हो मुझसे?
क्यूं हो तुम इतने खफा ?

आज से हम अपने नाम के
साथ तुम्हारा नाम जोड़कर
एक नया इतिहास रचाएंगे
तेरे और मेरे नाम को जोड़कर
आज से मुझे सब "रामचंद्र" बुलाएंगे
आज से मुझे सब "रामचंद्र" बुलाएंगे.....।।

सीमा चुघ
नोएडा, उत्तर प्रदेश

सपनों के वास्ते

एक नहीं अनेक लक्ष्य है मेरे,
कुछ करके जरूर दिखलाऊंगा ।
आज पीछे हूं मगर ,
कल आगे बढ़ जाऊंगा ।।
दिमाग की शक्ति पर ,
ज्ञानी बन जाऊंगा ।
नौका पर चढ़कर ,
लहरों के पार कर दिखलाऊंगा ।।
आगे बढ़ रहा हूं मैं,
चुनौतियों का सामना कर रहा हूं मैं।
एक दिन वो पल आएगा ,
जब सफल मैं बन जाऊंगा ।।
वकील बनकर न्याय दिलाना ,
खोज करके कुछ है दिखलाना ।
दुनिया की दुर्दशा देखकर ,
पाठक को है बतलाना ।।
कुछ आएंगे कुछ जाएंगे,
लेकिन न ही है घबराना ।
कुछ सपनों के वास्ते,
कुछ मर के भी है कर जाना ।।
मंजिल जब तक आएगी ,
तब तक लाचार हो जाऊंगा ।
रहेगी आंखों के सामने,
मगर न देख पाऊंगा ।।
क्षण-क्षण जीवन बदलेगा ,
कण-कण मंजिल आएगा ।
समय देख दुनिया बढ़ेगा ,
एक दिन मेरा जीवन की दस्तूर पढ़ेगा ।।

सोनू कृष्णन
चतरा, झारखंड

लोभजनित बंजारे

हम लोभजनित बंजारे।
अनपाया पाने की धुन में
जो पाया सब हारे।
हम लोभजनित बंजारे।
स्वप्न संजोए नए सदन के।
हमने त्यागे सुख आंगन के।
जिन नयनों के तारे थे हम ,
अब अपराधी उन्हीं नयन के।
उधर लाड़ को व्यर्थ बताया,
इधर गए दुत्कारे।
हम लोभजनित बंजारे।
ताजा को रूखा कहते थे।
सादा को सूखा कहते थे।
पाश्चात्य के पाश उलझकर,
व्रतियों को भूखा कहते थे।
दौड़ रहे अब रोटी खातिर,
भुला शर्म हर द्वारे।
हम लोभजनित बंजारे।
यादों को रखकर सिरहाने।
जब सुनते हैं गांव के गाने।
इक-इक करके याद आते हैं,
बिन मतलब वाले याराने।
आंखों से रह रहकर फूटे,
आंसू के फव्वारे।
हम लोभजनित बंजारे।
चौपालों का शोर ठहाका।
नोंक झोंक और धूम धड़ाका।
शहर जा रहे को समझाते,
बरगद जैसे रामू काका।
पता नहीं जीवित भी हैं या,
कबके स्वर्ग सिधारे।
हम लोभजनित बंजारे।
सीख गए हैं दाम लगाना।
लाभ हानि का ताना-बाना।
गौ ग्रास दे देने वाले,
जोड़ रहे हैं दाना- दाना।
ताल सुखाकर मछली ढूंढे,
हम ऐसे मछुआरे!
हम लोभजनित बंजारे!

पूर्णेन्दु चौधरी
भागलपुर, बिहार

अविरल धार

शांत निर्मल प्रेम सलिला ,मीठी कोयल सी कुहुकती ।
भाव की गति थामता कवि, शब्दों की लय मैं थिरकती ।
युग युगों से बहती आयी , मैं हूँ कविता, फिर बहूँगी।
पर कथा अपनी व्यथा की आज मैं कहकर रहूँगी।
यह सभी को है विदित , उन्मुक्त मैं हूँ निर्झरी .
आत्मा हूँ गीत की , मैं प्रेम की स्वप्निल परी ।
अभिव्यक्तियों की , पंक्तियों की मैं सखी हूँ ।
साध के जो बाँध ले सिर्फ मैं उससे बँधी हूँ ।
देखती हूँ आज तुम उस पाँत से बिछुड़े हुए हो ,
संस्कृति,साहित्य में भी लग रहे पिछड़े हुए हो ।
आज शब्दों में तुम्हारे बौखलाहट ही ध्वनित है ,
क्यों तुम्हें कविता भी लगती जैसे भाषा का गणित है ?
क्यों मेरी कमनीयता से , बच के अब चलने लगे हो ?
गद्य के ही खंड खंड कर , पद्य अब रचने लगे हो ।
कुछ भी लिखकर कह रहे हो कि कविता हो गयी है ।
तुम भ्रमित हो क्या तुम्हारी भाव सरिता खो गयी है ?
पंक्तियाँ जब जब नाचती हैं , भावना की ताल पर ।
पदचाप नूपुर की तरह लगते थिरकने ताल पर ।
गीत तुम गाओ मधुर , मृदुल शब्दों में सजाकर,
अंतर के तार हिला करते वीणा को हौले से बजाकर।
आत्म और आध्यात्म की,अनुभूतियों में डूब जाओ
पर अँधेरी रात के घर, एक तो दीपक जलाओ ।
कोई भी भूखा न सोये ,यह मेरा है कर्ज़ तुम पर
कोई भी तुमसे न रूठे , मैं करूँगी गर्व तुम पर ।
छलकपट का है चलन , झूठ के वह पाँव चलता ,
सच की ही तुम राह चलना,पास आयेगी सफलता ।
प्रेरणा संबल उन्हें दो ,जो हुये बरबस पराजित ,
एकता संकल्प निधि दो, अब न हो कोई विभाजित ।
अपनी ही पीड़ा समेटकर , गीत में गाकर क्या होगा
विश्व की हर चेतना को अपना स्वर देना ही होगा।
समवेत स्वर बन प्रेरणा , संवेदना झकझोर देगा ।
आस्था का नव मुकुल भी ,रुख जगत का मोड़ देगा ।
शब्द सुरभित नेह माला , प्रियतमा जब हाथ लेगी ।
मर्म समझेगी हृदय का,प्रलय तक भी साथ देगी ।
नव हर्ष समायेगा मन में ,वर देकर सत्कार करूँगी ।
तुम मेरा श्रृंगार तो कर दो,मैं फिर से रसधार बहूँगी ।
नव प्रतीक,परिधान लिये,नया शब्द संसार रचूँगी ।
भावों की लहरें दुलारती, मैं फिर अविरल धार बहूँगी ।

विवेक रंजन 'विवेक'
रीवा (म.प्र.)

नारी का अस्तित्व

महिषासुर का वध करके ,
वो देवी दुर्गा कहलाई है
वही अहिल्या वही रमाई ,
स्त्रियों को पढ़ाती सावित्रीबाई है ,
झाँसी की रानी मनु ने ,
अंग्रेज़ो को ललकारा है ,
इंदिरा गाँधी , सुषमा स्वराज ने ,
राजनीति मे सबको पछाड़ा है,
किरण बेदी , स्मिता सबरवाल ने,
न्याय की राह अपनाइ है ,
कल्पना चावला, सुनिता विलियम्स ,
चाँद भी नापकर आई है,
लता मंगेशकर ने सुरो के समंदर मे ,
सुरेख नइय्या चलाई है,
सुधा मूर्ति , फुलबासन भी,
सामजिक कार्यो मे बढ़कर आई है,
सुष्मिता सेन, ऐश्वर्या राय ,
विश्वसुंदरी का ताज लाई है,
महादेवी वर्मा, अंजुम, अनामिका,
मशहूर कवयित्री ये कहलाई है,
मैडम क्यूरी , कलेसेल्वी ,
विज्ञान की रूह मे बसाई है ,
बेटी, माँ, पत्नी, बहु,
सभी रूपों मे ये समाई है ,
हर क्षेत्र मे वो सफलता पाकर,
फूली नहीं समाती है,
देश विदेश , कला विज्ञान मे,
अपना लोहा मनवाती है।

ऋचा टेम्बेकर
रायपुर, छत्तीसगढ़

आत्म परिचय

मैं कौन हूँ, क्या हूँ मुझे पता नहीं,
जीवन की नदी में, मैं बहता रहता हूँ।
इस छोटी सी यात्रा में, मैं एक राही,
सपनों के पंख लगाकर उड़ता, धीरे-धीरे।

शब्द बुनकर बनी है मेरी पहचान,
भावनाओं की नदी ने सजाया यह अपार।
हर अनुभव की गहराई में छिपी मेरी असली पहचान,
मन की आग से जलता, यह अनोखा महाकाव्य।

मैं मरणशील हूँ, पर अमर होने की चाह रखता हूँ,
झूठ में भी सच को खोजता हूँ,
उम्मीद के दिए जलाता हूँ हर रात,
मुश्किलों में भी जिंदा रहती है यह आस्था।

आत्मा की mछोटी सी दुनिया में बसा है पूरा ब्रह्मांड,
क्षितिज के उस पार देखना चाहता हूँ।
दूर होकर भी पास होने का एहसास होता है,
हर साये में खोजता हूँ अपने अंदर की रोशनी।

मुस्कान और आँसू दोनों छिपे हैं आँखों में,
हर रंग में जिंदगी का मतलब छिपा है।
मैं एक अधूरी कविता हूँ, अभी और लिखना बाकी है,
भावनाओं की कविता की धारा में बहती है यह दूसरी।

मैं सपना हूँ, मैं सच्चाई हूँ, मैं धुंधली सी लकीर हूँ,
बिना परिभाषा के, अधूरे रहस्यों का मेला हूँ।
हर जवाब में एक नया सवाल छिपा है,
जिंदगी की इस किताब में, कहानी चलती रहती है।

संजीवनी हूँ मृगतृष्णा में रहा जल,
अपने अंदर ही खोजता वो बेशकीमती नग।
स्वयं की तलाश में डूबा समुद्र की थाह,
इस स्व के सफर में, मैं अपना ही प्रतिबिंब।

तो ये हूँ मैं, अलक्षित और अनूठा,
जिंदगी की लय में बना एक साधारण मान।
अनदेखी डगरों पर बढ़ता, ढूंढता अपने को,
हर मोड़ पर नवीनता से मिलती मेरी खुद की दृष्टि।

अंजना गोमास्ता
रायपुर, छत्तीसगढ़

बेटी के नाम

चुनौतियों को स्वीकारना
धैर्य और कौशल को अस्त्र बनाना
संकल्प पर अडिग रहना
विपरीतता के बीहड़ में
राह बनाना और लक्ष्य पाना
इतिहास रहा है मेरा ।
पर बेटी!
आज मन बहुत व्याकुल है
जितना सोचती हूँ
उतना ही उलझ जाती हूँ
चारों ओर वासना की आग है।
बड़ा ही विकट है दृश्य
मनुज सब काँपते हैं
मर्यादा का चीर हरण कर
दुःशासन नाचते हैं।
मौन हैं आज भी
भीष्म द्रोण और कृपाचार्य।
धृतराष्ट्र शकुनी और
दुर्योधन ही बोलते हैं।
युधिष्ठिर, हो रहे झूठे साबित
अर्जुन के लक्ष्य सब चूकते हैं।
भीम का बल क्षरित,
नकुल सहदेव मुठिया भींचते हैं।
आप्त वाक्य सब जल रहे
सत्य, नीति, नैतिकता खंडित हुई।
सुरक्षित नहीं है कोई कोना,
कोई आयु, कोई समय -
सब चुनौतियाँ मुझे स्वीकार हैं
मैं हारी नहीं हूँ और ना तुम्हें हारने दूँगी।
मैं तुम्हें साहस के अग्निबाण दूँगी
संस्कारित मर्यादा का कवच
और बुद्धि की कटार दूँगी
आत्म विश्वास का अभय दान
आत्म-ज्योति की धधकती मशाल दूँगी।
शुभ संकल्पों के ब्रह्मास्त्र
मधु कैटभ और महिषासुर के वंशज
एक भी बच्चे नहीं जिनसे,
तुम्हें वे पराक्रम के नागपाश दूँगी।
बेटी, तुम्हें ऊँची नई उड़ान दूँगी।

डॉ. स्नेहलता श्रीवास्तव
इंदौर, मध्य प्रदेश

मां

मां एक ऐसा रिश्ता जो दिल के करीब है
जो दिल की धड़कन है.
माँ का वो आंचल याद है,
माँ की ममता सी कोई मरहम नहीं,
माँ तेरे बिना मेरा वजूद नहीं,
मां आज तेरी बेटी भी एक मां है
अब माँ बनकर कर समझी हूं
जो समझ ना पाई थी कभी तेरी डांट
सुनकर गुस्सा होती थी
कभी जो फिकर मेरे लिए करती थी
जो मुझे डांट लगा कर
तुम भी छुप छुप कर रोती थी
उस प्यार भरे एहसास को समझी हूं मैं अब
कल तक तो थी मां तेरे आंचल में,
अब खुद मां हो गई मैं तूने जो सींचा है
मुझको .।
प्यार दुलार किया जो मुझको,
बस वही करने लगी हूं मैं
अपने ही बच्चों में खुद को तलाश रही ,
मैं ममता की मूरत बन कर उनको पाल रही हूं
तेरे दिए संस्कारों से उनको सवार रही हूं ,
मां तेरी ही परछाई हूं मैं पर,
तेरे जैसी ममता कहां ,
तेरे बलिदानों के आगे झुकता है मेरा तो मस्तक ,
मां जन्म देकर जो सही थी पीड़ा तुमने ,
कर्ज कभी ना चुका पाऊंगी ,
प्यार सिखाने सबको ही शायद मां तुम आई हो
निश्चल प्रेम करके ममता की मूरत कहलाई हो
अपने दर्द भूल तुम जीवन देने आई हो
मां शब्द नहीं है मेरे पास तेरे गुणगान के लिए
मां तुम हो अनमोल ममता भरा दिल लाई हो।

हरनीत कौर
छिंदवाड़ा, मध्य प्रदेश

मेरे पिता

बचपन की स्मृतियाँ
संग पिता के याद आ जाती
छा जाती मस्तिष्क पटल पर
जो काम पिता कर लेते थे
पिता के नही होने पर
वो लोगो से पूछना पड़ता।

हौसला अफजाई
और परीक्षा में पास होने पर
पीठ थपथपाई भी गुम सी गई
अब में पास हुआ किंतु
शाबासी की पीठ सूनी पड़ी है
और त्यौहार भी मुँह मोड़ चुके
और खुशियां भी रास्ता भूल गई
पकवान और नए कपड़े
कैद हो गए पेटियों में।
पिता
वृक्ष की तरह थे
जैसे वृक्ष पक्षियों का देते आसरा
पिता भी थे हमारा सहारा
किंतु एलबम के पन्ने खोलता
आँखों में आंसू छलक जाते
सोचता हूँ तो ऐसा लगता वो जीवित है
और उनकी साँसों से मेरी खुशियां
मुझे एक नई राह दिखा रही |

संजय वर्मा 'दृष्टि'
धार, मध्य प्रदेश

भारत बने महान

ईश्वर अल्लाह तेरे नाम,
सबको सन्मति दे भगवान !

जाति धर्म मजहब से हटकर,
हम सब करें देश हित काम !
आएं सदा सभी के काम,
जिससे भारत बने महान !!

ईश्वर अल्लाह तेरे नाम,
सबको सन्मति दे भगवान !

ऊंच-नीच का भेद मिटाकर,
समरसता का राह दिखाकर !
सम दृष्टि का भर दो ज्ञान,
जिससे भारत बने महान !!

ईश्वर अल्लाह तेरे नाम,
सबको सन्मति दे भगवान !

ईर्ष्या द्वेष जलन वा आए,
चंचल चित्त स्थिर हो जाए !
हम सब करें सृजन का काम,
जिससे भारत बने महान !!

ईश्वर अल्लाह तेरे नाम,
सबको सन्मति दे भगवान !

मय मद मत्सर मोह न आए,
स्थिर मन सबका हो जाए !
भर दो सब में ऐसा ज्ञान,
जिससे भारत बने महान !!

ईश्वर अल्लाह तेरे नाम,
सबको सन्मति दे भगवान

"जिज्ञासु" दिन रात ये गाए,
देश भक्ति मन सबके भाए !
ऐसा दो हमको वरदान,
जिससे भारत बने महान !!

ईश्वर अल्लाह तेरे नाम,
सबको सन्मति दे भगवान !

सत्य अहिंसा के पथ पर चलें ,
आए ना व्यवधान !
स्वच्छ स्वस्थ साक्षर हों सब,
जिससे भारत बने महान !!

ईश्वर अल्लाह तेरे नाम,
सबको सन्मति दे भगवान !

स्नेह समन्वय भाईचारा,
है येही संदेश हमारा !
सत्यम शिवम सुंदरम मय हो,
हम सब का संसार ये प्यारा !!

कमलेश विष्णु सिंह जिज्ञासु
राजघाट, वाराणसी (उत्तर प्रदेश)

वृक्षारोपण

वृक्ष को लगाना बड़ा,नेक कार्य माना गया,
पुत्र के समान ध्यान,आप सब रखिए।
हरा-भरा हरियाली,सर्वत्र दिखेगा भाई,
जीव-जंतु प्राणी प्रति,कुछ ऐसा करिए।
धर्म कर्म यही माने, रोजगार यही ठावें,
सभी का सहयोग हो,ऐसा आप बनिए।
हो पर्यावरण शुद्ध,होगा सभी जन खुश,
खुशनूमा पल होगा,बना सोच चलिए॥१॥

माहौल बनेगा अच्छा,रहेगा न कोई कच्चा,
शुद्ध हवा पाने योग्य,सभी को बनाइये।
जीवन है अनमोल,आपस में मेलजोल,
जीव रक्षा अभियान, सर्वत्र चलाइये।
कस के कमर चले,मन में प्रतिज्ञा करें,
संतुलन बनाने का,फर्ज तो निभाइये।
मानव कल्याण मर्म,जीवन रक्षक कर्म,
संकल्प वृक्षारोपण,वट को लगाइये॥२॥

वृक्ष से है फल-फूल, वृक्ष से है कंद-मूल,
वृक्ष से बना सुगंध,अब तो सजाइये।
वृक्ष से है लकड़ियां,वृक्ष से है खिड़कियां,
वृक्ष से है दरवाजे,इस को बढाइये।
वृक्ष से है परिवहन,वृक्ष से है निर्वहन,
वृक्ष ही पूजा है सभी, क्यारी तो बनाइये।
वृक्ष से है जिंदगानी,वृक्ष से है रवानगी,
बढ़ाने का अवसर,आप न गवाइये॥३॥

रमेश कुमार सिंह 'रुद्र'
कैमूर, बिहार

प्यारी हिन्दी

हिंदी सावन की मल्हार।
हिंदी पायल की झनकार।
हिंदी प्यारी है।
हिंदी सबसे है सुकुमार।
हिंदी भौरों की गुंजार।
हिंदी प्यारी है।
हिंदी शेरों की है दहाड़।
हिंदी सबको देती पछाड़।
हिंदी प्यारी है।
हिंदी हाथी की चिंघाड़।
करता सारा जग है लाड़।
हिंदी प्यारी है।
हिंदी बहती नदी की धार।
यह सब भाषाओं की ठार।
हिंदी प्यारी है।
हिंदी संस्कृति की जान।
यह संस्कार की पहचान।
हिंदी प्यारी है
हिंदी भावों का संचार।
हिंदी संवेदनाओं का सार।
हिंदी प्यारी है।
हिंदी है मोती का हार।
ये है वेदों का भी सार।
हिंदी प्यारी है।
हिंदी कवियों की है भाषा।
हिंदी भारत की अभिलाषा।
हिंदी प्यारी है।
अभिधा, लक्षणा और व्यंजना।
शब्दशक्ति से युक्त है हिंदी।
हिंदी प्यारी है।
हिंदी है अनमोल रत्न।
प्यारा है अपना वतन।
हिंदी प्यारी है।
हिंदी मेरी मातृभाषा।
बनेगी शीघ्र राष्ट्रभाषा।
हिंदी प्यारी है।
हम हिंदी में काम करेंगे।
अंग्रेजी गुमनाम करेंगे।
हिंदी प्यारी है।

डॉ. बिश्वम्भर दयाल अवस्थी
मो. 271 मुरारी नगर, सिद्धेश्वर रोड,
गली नं. 4 खुर्जा, बुलंदशहर (उ. प्र.)

डर की छाया

सावन आया, परन्तु
अबकी बार लड़कियां नहीं गयीं
पेड़ों के पास
लड़कियां डरने लगी हैं पेड़ों से,

मेघ गरजे, परन्तु
लड़कियों ने अबकी बार
नहीं डाला झूला
लड़कियां डरने लगी हैं रस्सी से,

भूख से रंभाती गाय को देखकर
अब भी द्रवित होता है लड़कियों का मन
परन्तु अब वे नहीं जा रहीं
खेतों -जंगलों में हरी घास लाने
लड़कियां डरने लगी हैं बियावानों से,

माँ फूँक रही हैं चूल्हा शाम को
घर में नहीं हैं पिता और भाई
रसोई में ख़त्म है नमक
परन्तु लड़कियां अब नहीं जा रहीं
हाट और बाज़ार
लड़कियाँ डरने लगी हैं अंधेरों से,

लड़कियों ने सोच रखा था कि
वह खूब पढ़ लिख कर बनेंगीं
अफसर, जज, डॉक्टर या इंजीनियर
परन्तु घर से दूर स्थित स्कूल
के रास्ते में पड़ते हैं
कई सुनसान स्थान, शायद इसीलिए
अब वे नहीं जाना चाहतीं स्कूल
लड़कियाँ डरने लगी हैं सुनसान स्थानों से,

लड़कियाँ बहुत भयभीत दिख रहीं हैं
क्यूंकि देश में चारों ओर फैल गये हैं
असंख्य आदमखोर भेड़िये |

अनुराग मिश्र ग़ैर
10-स्वपनलोक कॉलोनी
कमता, चिनहट
लखनऊ -226028

विश्व शांति

प्रेम एकता और भाईचारा,
हो जहाँ पर प्यार अपार,
आपस में मिलकर रहें,
करें एक दूसरे का सम्मान।
तभी होगी विश्व शांति ।
जाति धर्म का भेद न होगा,
उच्च नीच का खेलना होगा,
आएगी समाज में समानता,
होंगे सब एक समान।
तब विश्व में शांति होगी।
दबे कुचले लोग आगे बढ़ेंगे,
किसानों को मिलेगा उनका हक,
खत्म होगी गरीबी,
चाहे दूर हो या करीबी,
बुजुर्गों का होगा सम्मान।
तभी विश्व में शांति होगी।
खत्म होगी बिस्तार वादी नीतियाँ,
खत्म होगा दूसरे का हक मारना,
लालच का होगा अंत,
खत्म हो गए सारे बेईमान।
तभी विश्व में शांति होगी।
बंद होगी हथियार बनावे का होड़,
दूर होगा सामान से ये कोढ़,
धर्म और मजहब के ठेकेदारों को,
जब आएगा अपनी करनी पर शर्म,
हिंदू, मुस्लिम,सिख और इसाई,
होंगे सब सामान।
तभी विश्व में शांति होगी।
खत्म होगी बेरोजगारी,
हर चीज में होगी सबकी हिस्सेदारी,
तेरा नहीं मेरा नहीं सारा जहां हमारा,
घर-घर में खुशहाली जान।
तभी विश्व में होगी शांति।
खत्म होगा नारी पर अत्याचार,
बंद होगी भ्रूण हत्या ,
दहेज की आग में नहीं जलेगी दुल्हन,
होगा अपनी मर्जी से जीवे का फरमान।
तब विश्व में शांति होगी।
न करेगा कोई अन्याय,
न सहेगा कोई अन्याय,
चारों तरफ खुशहाली होगी,
होगा अमन और चैन।
तभी विश्व में शांति होगी ।
बदले की न भावना होगी,
एक दूसरे का सहयोग होगा,
अपनापन का भाव जगेगा,
तभी विश्व में शांति होगी,
फूट डालो और राज करो,
कि नीति जब होगी खत्म,
तभी विश्व में शांति होगी।

डॉ. दिनेश चन्द्र प्रसाद "दीनेश"
डी.सी.-119/4, स्ट्रीट न.310,
न्यू टाऊन, कलकत्ता-700156

ध्येय

चलो किसी की पीड़ा बाटें
चलो किसी का कष्ट हरें

सदभावों की कविता बाचें
पुण्य कर्म से पृष्ठ भरें

टूटा सपना कोई जोड़ें
व्यथा किसी की नष्ट करें
उनका पर्दाफाश करें अब
जो समाज को नष्ट करें
चलो किसी की.....

जिनके जीवन में अभाव हैं
मँझधारों में घिरी नाव है
हृदय सहन कर रहा घाव है
क्रूर भाग्य का दुष्प्रभाव है
जो आंसू भीगी हैं आँखें
उनमें सुख की वृष्टि करें
चलो किसी....

इस समाज में अपनापन हो
द्वेष ईर्ष्या घृणा दफन हो
प्रेम प्रीति ही अतिपावन हो
अलगावों का भाव दमन हो

गुम कोहरे में भाईचारा
हम उसको स्पष्ट करें
चलो....

मिटे ग़रीबी भूख दीनता
व्यक्ति व्यक्ति में हो समानता
बंटवारा हो, सुख का, धन का
यही देश की हो महानता
सेवा की निःस्वार्थ साधना
यही ध्येय उत्कृष्ट करें

चलो किसी की पीड़ा बाटें
चलो किसी का कष्ट हरें

डॉ. सुषमा सौम्या
26/मानस नगर जियामऊ,
हजरतगंज लखनऊ, उ. प्र.

सूर्य पुत्र कर्ण

हे द्वारकाधीश! तुम्हारी लीला को प्रणाम है।
पांडवों से रिश्ता मेरा आज भी गुमनाम है।।

कुंती मां को वचन दिया है,पांच बेटे सदा रहेंगे।
कर्ण,अर्जुन में कौन बचेगा, ये निर्णय देव करेंगे।।

किन्तु माधव मेरा परिचय, मुझको तो बतला देते।
वर्षों से पीड़ित राधेय को, मां कुंती से मिलवा देते।।

मैं राधेय, राधेय ही रहता, नहीं महल की मांग करता।
मैं सूर्य पुत्र कर्ण क्षत्रिय हूं,अपने मन को शांत करता।।

हर क्षण मेरा कौशल, मेरे परिचय का मौहताज हुआ।
वर्ण जाती के कारण ही, गुरु परशुराम से श्राप मिला।।

अर्जुन श्रेष्ठ धनुर्धर हो, द्रोणाचार्य ने अस्वीकार किया।
सच बतलाओ माधव, शिक्षा जाती का अधिकार हुआ।।

दुर्योधन का ऋणी सदा, मैं अंगराज कर्ण हुआ।
किंतु भेद सका न मीन,अवरोध कर्ण का वर्ण हुआ।।

सबका मौन समझ आता है, माधव तुम तो बोल देते।
मैं पांडवों का ज्येष्ठ रहस्य, समय रहते ही खोल देते।।

अब समर-भूमि से पीछे, माधव क्या ही हट पाऊंगा।
दुर्योधन का भूल उपकार, मैं इंद्रप्रस्थ न ले पाऊंगा।।

किंतु केशव कर्ण की, एक मात्र विनती है।
अनुज युधिष्ठर से न कहना, मेरी माता कुंती है।।

धर्मराज फिर राज्य त्यागकर, धर्म की वाणी बोलेंगे।
भूल गया हूं ऋण वचन सब, मोहे न स्वीकार होंगे।।

युद्ध भूमि में हम दोनों का, मिलना तो निश्चित है माधव।
मैं दुर्योधन का सेनापति, कृष्ण,अर्जुन के सारथी होंगे।।

अपराजिता उन्मुक्त
हरिद्वार, उत्तराखंड

स्त्री

पीड़ा को शब्दों और लय में ढाल लिया
मुसीबतों को नियति समझ टाल दिया
हर तकलीफ़ सहती रहीं हंस कर
जीते जी मरती रहीं स्त्रियों ने कमाल किया

कही गईं गंवार , अनपढ़ नासमझ
बांध लिया हर अवेहलना को कोछे में आशींवाद समझ
खुशी का नक़ाब ओढ़ ,दर्द को छुपाती रहीं
मां - बाप की परवरिश को बेमिसाल किया
जीते जी मरती रहीं स्त्रियों ने कमाल किया।

सैलाब आसुओं का जब भी उमड़ आया
भूल सब वेदना को घर परिवार चलाया
जाएं तो जाएं कहां सिवाय अपने ये सारा जग है पराया
झुके वैन और प्रथावत मौन को
नियति समझ दिल ही दिल में मलाल किया
जीते जी मरती रहीं स्त्रियों ने कमाल किया।

आंच जब भी आई अपनो पर
निर्जला व्रत रखे अन्न का परित्याग किया
कभी सती तो कभी सावित्री बनकर
आन पड़ी विपदाओं का संहार किया
डट कर निभाती रहीं तीज,त्योहार परंपरा
पुरखों की विरासत को संभाल लिया
जीते जी मरती रहीं स्त्रियों ने कमाल किया।

डॉ. वर्षा महेश
आईआईटी बॉम्बे
पवई, मुंबई- 76

शरद पूर्णिमा

वृन्दावन में यमुना तट पर रास रचायो है ।
शरद पूर्णिमा पावन पर्व पुराणन गायो है ।।
यद्यपि निशा नियम विरुद्ध ये फूल खिले है ।
जो विकसित प्रभात रात्रि में वही खिले हैं ।।
व्रज की गोपी मग्न मधुर वंशी धुन पायी ।
मनमोहन ने खींच निकट सब नारि बुलायी ।।
परम रम्य यमुना तट पर आतुर चल आयी ।
व्रज की महिमा वेद पुरान शास्त्रन ने गायी ।।
पहले कृष्ण ने नारी धर्म की बात बतायी ।
पति पत्नी का धर्म कर्म की कीर्ति गायी ।।
सप्त स्वरों में मधुर वंशी की तान सुनायी ।
वृन्दावन की गोपी सुध तन मन बिसरायी ।।
सब गोपी संग कृष्ण सबको दिये दिखायी ।
रास बिहारी चतुर सुनारि संग रास रचायी ।।
जागा जब अभिमान अन्तर्हित हुए कन्हाई ।
मक्खन मन से विकल गीत गोपी ही गाई ।।

डॉ. राजेश तिवारी 'मक्खन'
झांसी, उत्तर प्रदेश

नारी शक्ति

सावधान ...
बहुत सुन लिया बहुत सह लिया बहुत रो लिया,
अब आवाज को अपनी बुलंद करो ,
युग नही अब सीता का तुम चंडी का अब रूप धरो ।।
समय नहीं अब आज्ञा मान चुपचाप वन को जावे का ,
शुंभ निशुंभ की छाती पे चढ़कर अब प्रहार करो ।
तुम अब तक सब सहती आयी पर अब आवाज उठाना है,
तेरे अंदर काली भी है ये सबको बताना है,
बनो नही अब अबला तुम शक्ति का विस्तार करो,
बन द्रौपदी , दुशासन के लहू से अपने केश धुलो,
बात लाज पे आ जाए तो चक्र उठाओ मुरारी का,
भरी सभा में दुर्योधन का शीश शरीर से पृथक करो,
बहुत सीख लिया चूल्हा चौका अब शस्त्रों का ज्ञान लो तुम,
समय आ गया है अब सम्मान के बदले सम्मान लो तुम,
पुरुषो के इस समाज में पुरुष विरुद्ध न सुनी जाओगी तुम,
इसीलिए उठो जागो और अपना समाज तैयार करो ,
यदि ये सब तुम न तुम कर पाओ तो ज्ञान को शस्त्र बना लेना ,
अपनी मंजिल को चुन के तुम उस मंजिल को तुम पा लेना ,

हे पुरुष
देव वहीं पे रहते है जहां नारी पूजी जाती है,
फिर क्यूं नही ये छोटी सी बात समझ में आती है,
जो शिव जैसे बनोगे तुम तो बन शक्ति वो शक्ति तुम्हारी बढ़ाएगी,
जो रक्तबीज के लक्षण आए तो खप्पर पे शीश चढ़ाएगी ,
जो सीता जैसी नारी की उम्मीद लगा के बैठे हो,
खुद में कभी राम को देखा ? जो यूंही ऐंठे बैठे हो,

आखिर में हे नारी तुमसे बस यही कहना चाहूंगा ,
मां,बहन, बेटी, प्रियतमा सब तुम में ही पाऊंगा ।

तुम्हारे ऋण को ये समाज कभी उतार न पाएगा,
पूरे ब्रह्मांड में तुमसा प्रेम कहीं और न पाएगा ।।

समय आने पे इस प्रेम को तुम शूल करो,
समय नही अब सीता का ,तुम चंडी का अब रूप धरो ।।

उत्कर्ष त्रिपाठी प्रियम

सक्षम नारी

तेरे सपनों की अभय उड़ान आसमान पर भारी है
अक्षम नही हो सकती है तू आज की सक्षम नारी है

तेरी करुण दृष्टि को जग ने रोदन मान लिया
तेरी ममता की छाया को सिर्फ संवेदन मान लिया
कहने को तो मिली हुई है समता तुझे जमाने में
वर्षो लग जाते हैं तुझको अपना गौरव पाने में
रुकना नही है बीच राह में अभी सफ़र तो जारी है
अक्षम नही हो सकती है तू आज की सक्षम नारी है

जो आजादी मिली तुझे वो भी तो विपदा भारी है
पौरुष पुरुष का बना रहे ये तेरी जिम्मेदारी है
कहने को तो हर घर में नारी की पूजा होती है
फिर क्यों गली मोहल्लों में अस्मत उसकी खो जाती है
आजादी मिलने पर भी तेरी पाबंदी जारी है
अक्षम नही हो सकती है तू आज की सक्षम नारी है

तेरे मन के भावों का उपहास बनाया जाता है
तेरी बुद्धि की गरिमा को भी दाग लगाया जाता है
जब तू ही है प्रणय-सूत्र,तू ही दुर्गा,तू काली है
फिर नर प्रधान समाज की पाबंदी क्यों तुझे उठानी है
तेरे संघर्षों की गाथा की मेरी लेखनी प्रचारी है
अक्षम नही हो सकती है तू आज की सक्षम नारी है

तेरे सपनों की अभय उड़ान आसमान पर भारी है
अक्षम नही हो सकती है तू आज की सक्षम नारी है

मंजू जाखड़
लडायन, जिला-झज्जर(हरियाणा)

कोशिश

तू एक कोशिश और कर,
यूं बैठ ना हार कर।
पुजारी है तू कर्म का,
बस ! थोड़ा तो इंतजार कर।।
विश्वास को मजबूत बना,
संकल्प को भू धरा पर उतारकर।
कम से कम एक कोशिश और कर,
यूं बैठ ना हारकर।।
उत्साह को निहारकर,
कर्म की दूनी रफ़्तार कर।
लपक ले मंजिल को,
हाथों को फटकार कर।
बस ! तू एक कोशिश और कर,
यूं बैठ ना हारकर।।
मन में उमंग छाएगी,
आंखों में लालिमा आएगी,
बुदबुदायेंगे होठ तेरे खुद ब खुद,
हर्ष की लहर धमा चौकड़ी मचाएगी।
सिर्फ एक बार कोशिश और कर,
अबकी बार मंजिल मिल ही जायेगी।।

लोकेश कुमार उपाध्याय
अलवर, राजस्थान

उर्मिला हो गई

कोई तन-मन को ऐसे छुआ लाज से मैं शिला हो गई
इतनी लम्बी प्रतीक्षा हुई स्वयं ही उर्मिला हो गई

स्वर्ण तन मन मेरा राजधन वो मेरा
आएगा लौटकर प्राणप्रण वो मेरा
रात भर राह तकती रही जागकर
ये हठीले नयन टिक गए राह पर
मन में आशा लिए हूँ हिमालय सदृश
मन को मंदिर बनाई शिवालय सदृश

पल-दो-पल चैन पाया नहीं, दर्द की श्रृंखला हो गई
इतनी लम्बी प्रतीक्षा हुई स्वयं ही उर्मिला हो गई

याद करके सजन नित बरसते नयन
कब निहारेंगे प्रियतम, तरसते नयन
नींद रूठी रही नयनों से रात-भर
ये रंग मेहंदी के चुभते रहे हाथ पर
सूखते सब सुमन बहके-बहके अयन
उलझे-उलझे शिरोरूह बढ़ाते अगन

स्वांस दर स्वांस पूछे यही, क्या शिकवा गिला हो गई
इतनी लम्बी प्रतीक्षा हुई स्वयं ही उर्मिला हो गई

अब बचा लो मुझे मौन क्यूं हो भला
भर ले आगोश में दूर क्यूं है खड़ा
आखिरी सांस तक मैं तुम्हारी प्रिये
मैं तड़पती रही पर न हारी प्रिये
कितने तावे ज़माने के सहती रही
याद में रात-दिन ख़ुद में जलती रही

आखिरी बार मिलने तोआ,ऐसी क्या नाज़िला हो गई
कोई तन-मन को ऐसे छुआ लाज से मैं शिला हो गई
इतनी लम्बी प्रतीक्षा हुई स्वयं ही उर्मिला हो गई

कुमार विशू
गोरखपुर, उत्तर प्रदेश

छूट गए

जो भी थे मेरे अपने इस जहाँ में,
जिन्दगी की लहर में छुट गए,
मेरे सारे अपने, जो कहते थे न जुदा होंगे,
जिन्दगी के सफर में छुट गए,
कुछ रिश्ते हमने दिल से धड़कन की तरह बनाए थे,
हमारे जीते जी स्वार्थ की दुनिया में छुट गए,
जाने कितने हसीन ख्वाब हमने सजाये थे,
वक़्त के साथ, सभी अपने आप टूट गए,
चेहरा तो कई बार साफ कर लिए,
मुझे क्या मालूम, दाग जिगर में छुट गए,
जल रहा है मेरे दिल का बाग वो चमन,
फूल तो आज भी सलामत है मेरी दुआ से,
पर अंगार बनी मेरी जिन्दगी हम तो लूट गए,
कश्ती का क्या कसूर, दूर है साहिल बहुत,
मैं लाचार बीच मझधार में,
जिन्दगी के सारे अरमान टूट गए,

भोला शरण प्रसाद,
2173, एस गोल्फ शायर,सेक्टर 150, नोएडा,
जिला..गौतमबुद्धनगर (यू.पी.) 201310

दिल्ली @ सीताराम गुप्ता | प्रमोशन

प्रमोशन - 1

कोई दो ढाई घंटे के प्रेज़ेंटेशन के बाद वेदांत सर ने कहा, " यदि किसी व्यक्ति को कोई भी समस्या है तो यहाँ मेरे पास स्टेज पर आ जाए। मैं इस प्रेज़ेंटेशन में बतलाए गए तरीकों से अभी और यहीं आपकी उस समस्या का समाधान करके दिखला देता हूँ।" वेदांत सर "समस्याओं से कैसे मुक्ति पाएँ?" विषय पर वर्कशॉप्स आयोजित करते हैं। आज उसी वर्कशॉप के विषय में निशुल्क परिचयात्मक कार्यक्रम हो रहा था। हॉल पूरा भरा हुआ था। संख्या किसी भी तरह से चार सौ से कम नहीं थी। वेदांत सर के आमंत्रण के कुछ समय तक तो कोई व्यक्ति नहीं उठा लेकिन कुछ समय बाद एक सज्जन ने उठने का साहस किया। उन सज्जन को देखकर चार-पाँच लोग और उठ खड़े हुए और उन चार-पाँच लोगों को देखकर ये संख्या चालीस-पचास तक जा पहुँची।

चालीस-पचास लोगों को स्टेज पर आने के लिए तत्पर देखकर वेदांत सर ने कहा, "फ्रैंड्स! इतने सारे लोग एक साथ स्टेज पर नहीं आ सकते। कृपया कोई पाँच लोग जल्दी से स्टेज पर आ जाएँ।" जिन्होंने ज़्यादा फुर्ती दिखलाई वे पाँच लोग स्टेज पर पहुँच गए। पाँचों को तीन-तीन फुट की दूरी पर कुर्सियों पर बिठा दिया गया। वेदांत सर ने उन सब से ऊँची आवाज़ में उनकी समस्याओं के बारे में पूछा। फिर प्रेज़ेंटेशन में बतलाए गए तरीके से सबको कुछ मिनट का एक ध्यान का अभ्यास करवाया गया। उसके बाद सबको उसी अवस्था में उनकी समस्याओं के अनुसार कुछ अलग-अलग वाक्य मानसिक रूप से दोहराने के लिए उन्हें दिए गए। सब लोग आँखें बंद करके दिए गए वाक्यों की मानसिक पुनरावृत्ति में लग गए। कुछ समय के बाद धीरे-धीरे आराम से सबकी आँखें खुलवाई गईं और उनसे उनके अनुभवों के विषय में पूछा गया।

आँखें खुलने पर सभी अत्यंत प्रसन्न लग रहे थे। सबने अपने-अपने अनुभव सुनाए। लगता तो यही था कि उनकी समस्याओं का समाधान हो गया है। सबने सबके सामने स्पष्ट रूप से इस तथ्य को स्वीकार किया। हॉल के अंदर कुछ देर तक सन्नाटा रहने के उपरांत हॉल तालियों से गूँज उठा। उन पाँच व्यक्तियों में से एक व्यक्ति शीघ्रता से स्टेज से उतरकर अपनी सीट पर गया और वहाँ रखा हुआ एक बड़ा-सा ख़ूबसूरत रंग-बिरंगा बुके उठाकर लाया और वेदांत सर की ओर लपका। बुके वेदांत सर को देने के बाद उसने माइक माँगा। माइक हाथ में आने के बाद उसने कहा, " वेदांत सर मैं दस साल से अपनी इस समस्या को लेकर परेशान था लेकिन आपने चुटकियों में इसे हल कर दिया। आपका बहुत-बहुत अभिनंदन व आभार! मैं इस वर्कशॉप को अवश्य करूँगा।"

हाँ हमारी अधिकांश समस्याएँ काल्पनिक होती हैं और चुटकियों में उनका उपचार किया जा सकता है। ये कोई नई बात नहीं है। यदि हमारी समस्याओं का समाधान नहीं होता तो इसका कारण है हम कुछ महत्त्वपूर्ण सूत्र नहीं जानते और यदि जानते हैं तो उन्हें अपने जीवन में लागू नहीं करते। इसके लिए ही एक अच्छे प्रशिक्षक की आवश्यकता होती है। लेकिन एक बात हैरान कर देने वाली है और वो ये कि कुछ लोग जब अपनी समस्याओं से परेशान होकर उनके निवारण के लिए किसी समस्याओं से मुक्ति विषयक परिचयात्मक सेमिनार में भाग लेने के लिए जाते हैं तो उन्हें कैसे पूर्वाभास हो जाता है कि आज उनकी दशकों पुरानी समस्या का निराकरण हो जाएगा और समस्या का निराकरण करने वाले अथवा प्रशिक्षक के लिए वे घर से उपहार अथवा फूलों का गुलदस्ता साथ लेकर चलना नहीं भूलते।

दिल्ली @ सीताराम गुप्ता | प्रमोशन

प्रमोशन - 2

हॉल पूरी तरह से लोगों से भरा हुआ था। उपस्थित लोगों के चेहरे प्रसन्नता, आत्मविश्वास और उत्साह से दमक रहे थे। आठ सप्ताह के व्यक्तित्व विकास कार्यक्रम के कठोर प्रशिक्षण के उपरांत आज उसकी ग्रैजुएशन सेरेमनी थी। जिन लोगों ने प्रशिक्षण लिया था सभी को प्रेज़ेंटेशन देना था। सभी इसके लिए तैयार थे और अपने आपको बदले हुए एक नए व्यक्ति के रूप में सिद्ध करने के लिए तत्पर व उल्लसित भी। बिना एक सैकेण्ड की देरी के कार्यक्रम प्रारंभ हो गया। एक-एक कर लोग आने लगे और अपना प्रेज़ेंटेशन देने लगे। जो लोग स्टेज पर चढ़ते ही काँपने लगते थे और माइक के सामने पहुँचते ही जिन की आवाज निकलनी बंद हो जाती थी अथवा ज़ंग लगे कनस्तर की भाँति खड़खड़ाने लगती थी आज पूरे जोशो-ख़रोश के साथ धाराप्रवाह बोले जा रहे थे। किसी के भी चेहरे पर तनाव, दुविधा अथवा संकोच का नामो-निशान नहीं था।

पब्लिक स्पीकिंग के अतिरिक्त और भी बहुत कुछ सिखाया गया था इस महत्त्वपूर्ण व्यक्तित्व विकास कार्यक्रम में। पूर्णतः वैज्ञानिक एवं सकारात्मक दृष्टिकोण का विकास व नकारात्मकता का पूर्णतः त्याग। आपसी सहयोग, सद्भावना, संवेदनशीलता, सत्यनिष्ठा, ईमानदारी व अन्य सद्गुणों का पालन व झूठ-फरेब, राग-द्वेष, पाखण्ड, कृत्रिमता व अन्य दुर्गुणों से दूरी रखना। हैरानी हो रही थी ये देखकर कि केवल आठ सप्ताह के प्रशिक्षण के उपरांत सभी जैसे शैतान से फरिश्ते बन चुके थे। हाँ, इसमें रत्ती भर भी झूठ नहीं था। लोगों के व्यवहार से ये सब बख़ूबी झलक रहा था। लोग अपनी इस उपलब्धि को दिखलाने के लिए अपने परिवार के सदस्यों को ही नहीं अपने मित्रों और अन्य परिचितों को भी साथ लेकर आए थे। सब हैरान कि ये हो क्या रहा है? आगंतुकों को भी जैसे पंख लग गए हों। वे भी पूरे जोशो-खरोश के साथ समारोह का अभिन्न अंग बन चुके थे।

जब भी कोई व्यक्ति स्टेज पर पहुँचता सभी न केवल ज़ोर-ज़ोर से आवाज़ें निकालकर व तालियाँ बजाकर उसका स्वागत व उत्साहवर्धन करते अपितु उसके प्रेज़ेंटेशन की समाप्ति के उपरांत भी ये सिलसिला ख़त्म होने का नाम न लेता। राहुल के साथ भी यही सब हुआ। स्वागत, उत्साहवर्धन व प्रशंसा सब। अपने प्रेज़ेंटेशन के उपरांत राहुल अपने स्थान पर आकर बैठ गए। आसपास बैठे हुए लोगों ने भी हाथ बढ़ा-बढ़ाकर राहुल से हाथ मिलाकर इस उपलब्धि पर उसे मुबारकबाद दी। तभी कार्यक्रम के संचालक ने घोषणा की कि प्रशिक्षण कार्यक्रम के प्रशिक्षक आलोक दास कुछ कहना चाहते हैं और वे माइक के सामने से हट गए। अब आलोक दास माइक के सामने थे।

आलोक दास के सामने आते ही उनके स्वागत व सम्मान में देर तक तालियाँ बजती रहीं। बजती भी क्यों न? ये उनके कुशल प्रशिक्षण का ही प्रभाव था जो पूरे परिवेश को उत्साहपूर्ण बनाए हुआ था। उन्होंने हाथों के इशारे से बड़ी मुश्किल से लोगों को शांत करवाया और कहा, "दोस्तो! आपकी प्रसन्नता, आत्मविश्वास और उत्साह देखकर मैं अभिभूत हूँ। आप सबने मेरे प्रयास को सार्थक किया इसके लिए मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। आप सब और मैं ही नहीं यहाँ पधारे हुए अन्य सभी व्यक्ति भी आपसे बहुत प्रभावित हुए हैं। मित्रो! अभी-अभी एक सज्जन मुझे एक पैकेट देकर गए हैं। मुझे नहीं पता इस पैकेट में क्या है? वे राहुल के प्रेज़ेंटेशन से इतने अधिक प्रभावित हुए हैं कि वे राहुल को एक छोटा सा गिफ़्ट देना चाहते हैं लेकिन उन्होंने अपना नाम न बतलाने की शर्त रखी है। वे अपना नाम गुप्त रखना चाहते हैं।" इसके उपरांत राहुल को पुनः स्टेज पर आमंत्रित किया गया।

आलोक दास पैकेट खोलने लगे। सभी की उत्सुक निगाहें पैकेट पर जम गईं। पैकेट में चेन जैसी कोई चमकती हुई चीज़ थी। हर चमकती हुई चीज़ सोना नहीं होती लेकिन ये चमकती हुई चीज़ सोना ही थी। ये एक सोने की चेन थी जो काफी भारी लग रही थी। बच्चे की उँगली जितनी मोटी विशुद्ध सोने की चमचमाती चेन प्रशिक्षक आलोक दास ने राहुल के गले में डाल दी। इसके बाद और ज़्यादा देर तक तालियों का दौर चलता रहा। किसी अनजान व्यक्ति द्वारा किसी अनजान व्यक्ति को उसकी विशेष योग्यता से प्रभावित होकर उसे लाखों रुपए का उपहार देने के लिए इतना तो होना भी चाहिए। लोगों का उत्साह चरम पर था लेकिन इस उत्साह में पिछले आठ सप्ताह के दौरान जो सीखा और सिखाया गया था उसका एक पाठ पहले ही दिन नकार दिया गया था इस ओर कम ही लोगों का ध्यान गया। आलोक दास का भी नहीं या फिर वो भी इस प्रमोशन में शामिल हो गए थे?

दिल्ली @ सीताराम गुप्ता | प्रमोशन

प्रमोशन – 3

अख़बार में एक बड़ा सा रंगीन फोटो छपा था। दिवंगत की आठवीं पुण्यतिथि पर उन्हें श्रद्धासुमन अर्पित किए गए थे। लिखा था आप हमारे प्रेरणास्रोत हैं। आपके द्वारा दिखलाए गए आदर्शों पर चलने का संकल्प दोहराया गया था। नीचे संकल्पकर्त्ताओं की नामावली प्रकाशित की गई थी। कोई दर्जन भर फ़र्मों के नाम भी लिखे थे। बहुत बड़ा इश्तिहार था। राजेश को फोटो कुछ परिचित सा लगा। दिमाग़ पर थोड़ा ज़ोर डाला तो न केवल फोटो पहचान में आ गया अपितु वर्षों पुरानी कई घटनाएँ भी राजेश मन में किसी फिल्म की रील की तरह चलने लगीं। कई साल पहले की बात है राजेश इन सज्जन के पड़ोस में रहते थे। दरअसल वहाँ पर राजेश की एक दुकान थी और दुकान के सामने की गली में इन सज्जन का घर था। कोई व्यवसाय करते थे या कोई उद्योग लगा रखा था कुछ स्पष्ट नहीं था। रोज़ दोपहर को एक गाड़ी आकर उन्हें उठा ले जाती थी। उठा ले जाती थी मतलब ड्राइवर ही स्वयं उतरकर पिछली सीट का दरवाज़ा खोलता था तब ये सज्जन किसी तरह अंदर घुसते थे। फिर ड्राइवर ही दरवाज़ा बंद भी करता था।

इसका कारण था शरीर से काफी स्वस्थ थे। इतने स्वस्थ कि स्वयं गाड़ी का दरवाज़ा खोलना या बंद करना भी उनके लिए संभव नहीं था। जितने हाथ-पैरों से स्वस्थ थे उससे कई गुना स्वस्थ उनका उदर था। स्वास्थ्य के साथ-साथ पिछली रात की ख़ुमारी भी बाक़ी होती थी। लड़खड़ाने में न तो उनकी ज़बान ही उनके शरीर से पीछे रही और न शरीर ही कभी ज़बान से पीछे। शाम को देर से लौटते थे। उनके लौटने के कुछ देर बाद उनका लड़का या लड़की राजेश की दुकान से सोडा आदि चीज़ें ले जाते थे। बाद में और देर-देर से लौटने लगे। बाहर से ही सोडे का इस्तेमाल करके लौटते थे। कभी कोई कार उन्हें अनलोड करके चली जाती थी तो कभी ऑटो से आते थे। कार से आते तो ड्राइवर आराम से उतारकर घर के दरवाज़े तक छोड़ देता था लेकिन जिस दिन ऑटों से आते थे उन्हें बहुत दिक़्क़त होती थी। घर भूल जाते थे। घर खोजने का भी एक तरीक़ा ढूँढ लिया था चमनलाल राय ने। हाँ उनका नाम था चमनलाल राय। लाला चमनलाल राय ऑटो से आते तो सीधे राजेश की दुकान पर उतरते।

लाला चमनलाल राय ऑटो से उतरते ही दुकान के काउंटर का सहारा लेकर खड़े हो जाते। फिर आदेश देते, "राजेश भैया एक बड़ा पैकेट हमारा ब्रांड भी दे दो।" सिगरेट का पैकेट लेकर उसे कुरते की सामने वाली जेब के हवाले कर देते। फिर बड़ा सा नोट निकालकर पेमेंट करते। बाक़ी पैसे उठाकर किसी तरह कुरते की साइड वाली जेब में ठूँस लेते। फिर अपनी लड़खड़ाती ज़बान को यथासंभव सँभालने का प्रयास करते हुए कहते, " राजेश भैया बुरा न मानो तो ज़रा मुझे घर के दरवाज़े तक ....।" पड़ोसी होने के नाते उनको उनके घर के दरवाज़े तक छोड़ना या छुड़वाना भी पड़ता था। उनके घर का सामान भी राजेश की दुकान से ही जाता था जिसकी पेमेंट उनके कोई भाई या कोई रिश्तेदार करते थे। स्वयं लाला चमनलाल राय व उनका परिवार दूसरों के रहमो-करम पर पलता था। यद्यपि उन्होंने कभी ऐसा कोई काम नहीं किया जो उनका या उनके परिवार की बदनामी का कारण बने पर आज बीस साल बाद राजेश को पता चला कि लाला चमनलाल राय का इतना बड़ा परिवार है और ये दुनिया छोड़ने से पहले वो पूरे परिवार के लिए प्रेरणास्रोत बन गए थे।

PRANTI INDIA
Bagaura, Bihar - 841404 (India)
Ph.: +91 9453535495
www.PrantiIndia.com info@prantiindia.com

Pranti India
9 789334 097054

रजिस्ट्रेशन: बी आर 35/0029626, प्रान्ति इंडिया के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक ए. के. प्रसाद द्वारा पुरानी बाजार, बगौरा (बिहार) 841404, भारत से मुद्रित एवं प्रकाशित
*इस अंक में प्रकाशित रचनाओं के चयन एवं संपादन हेतु संपादन मंडल उत्तरदायी।